SHREE SWAMINARAYAN
શ્રી સ્વામિનારાયણ

Rs. 5/-

JULY '06



પ્રકાશક:- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



मूली मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का चंदन चर्चित दर्शन ।



सुरेन्द्रनगर मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का चंदन चर्चित दर्शन ।



उनावा मंदिर में ठाकुरजी का चंदन चर्चित दर्शन ।



प्रांतीज मंदिर में विशाल सभा में श्रीहरि के छठे और ७ वें वंशज के दिव्य दर्शन का लाभ लेते हुए हरिभक्तगण ।



प्रांतीज मंदिर में शताब्दी महोत्सव के प्रसंग पर विष्णुयाग की विधि प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पन्न हुई ।



रिद्रोल मंदिर में पाटोत्सव की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



प्रांतीज मंदिर में शताब्दी महोत्सव के प्रसंग पर भव्य शोभायात्रा में प.पू. आचार्य महाराजश्री दर्शन देते हुए ।



जमीयतपुरा श्री प्रभाहनुमानजी के नूतन मंदरि का सूचित प्लान ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९१५९७ - ९८२५३०१५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠસ્થાન મુખપત્ર

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ५ जुलाई -२००६

अ नु क्र म णि का

१.	अरमदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	श्रीहरि के छट्ठे वंशज प.पू. बडे महाराजश्री के सांनिध्य में पवित्र कैलाश मानसरोवर यात्रा	४
४.	गुरुपूर्णिमा पर्व पर धर्मकुल महिमा का आचमन	५
५.	प्रायश्चित्त	८
६.	गुरु पूर्णिमां	११
७.	मन मान से बच	१३
८.	ससत्संग बालवाटिका (१) बर्फ में आग लगेगी क्या ? (२) सद्‌गुणों को ताजा रखने के लिये क्या करना चाहिए ?	१४
९.	प्रश्नपेटी	१६
१०.	भक्तिसुधा (१) भगवान जैसे है वैसे हि उन्हे पहचाना चाहिए । (२) "स्वरछ" करना है । (३) स्वामिनारायण नाम मणि है । (४) भुज के लाधीबा	१७
११.	समाचार वृत्तांत	२१

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

अस्मदीयम् तन्त्रीश्री की तरफ से.....

श्री स्वामिनारायण भगवान ने जीव के मोक्ष में माया को विघ्नरुप माना है, भगवानने उसे पहचानने की वात की है । माया क्या है ? धन, संपत्ति, सोना, स्या, स्त्री, पुत्र, परिवार मे सभी संसार की माया हैं । इसका जो त्याग करे वही जीव माया से तरजाता है । ऐसा समझकर जीव उसका त्याग करने का प्रयत्न करे । कितने तो उसका त्याग किये हैं । फिर भी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सके । तो क्या माया को पहचानने मे भूल हुई या कोई कमी हुई इसमें क्या कारण हो सकता है ? इसके लिए विचार करें तो महाराज के वचन को याद करना पडेगा । वह क्या है ? महाराज कहतें है कि भगवान के भजन में जो विध्न करे वही माया है । तो भगवान के भजन करने में क्या विघ्नरुप हैं ? इसके लिए अन्तर्मुखी होना आवश्यक है । पुराणों में बताया गया है कि जैसे राजा जनक राज्य कार्य करते थे । राज्य, धन, स्त्री, पुत्र, बन्धु सभी कुछ रहते हुए भी विघ्नरुप नहीं था, इसी लिए राजा जनक विदेह कहलाये ।

यह सब हों तो भगवान की भजन में सहायक कहा जायेगा तो उसे माया कैसे कहा जाय ? कारण यह कि मोक्षदाता भगवान की भजन में यदि उपयोगी हो तो वह माया नहीं कही जायेगी । तो माया को कैसे पहचाना जाय ? कौन-कौन भगवान की भजन करने में विघ्न पैदा करते हैं । धन, पुत्र, सम्पत्ति, कलत्र इत्यादि के सिवाय और विध्न करने वाले कौन-कौन हैं ? जीव को जब मान सन्मान मिले तथा यश कीर्ति मिले तो भी विध्न होता है । अथवा मैं तथा मेरा का अभिमान भी भजन में विघ्न करता है । मैं इतना बड़ा त्यागी, इतना बड़ा भक्त, ज्ञानी, ध्यानी, योगी आदि नाम से कीर्ति, मान मिलने लगे तब भगवान की भजन बन्द होने लगती है, इन्हीं के पीछे जीव अपनी आयुष्य को बरबाद करने लगता है । अपनापन जहाँ नहीं है वह मठ मंदिर अपनी यश कीर्ति के लिए जिन्दगी खपा देते हैं और भजन करना छूटजाता है । जो इस माया को पहचान जाते हैं वे श्रीहरि के अक्षरधाम को प्राप्त करलेते हैं । अन्यथा परमात्मा की माया में घूमते रहजायेंगे । इस माया से उबरने के लिए श्रीहरि की कृपा परमावश्यक है । इसीलिए उन्हीं परमात्मा की शरणागति सभी को मिले ऐसा सुन्दर संकल्प सभी को करना चाहिए ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
- *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

जून -२००६

१. नरनारायण नगर (मूलीदेश, ता. हलवद) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

३-४. समद्रा (कच्छ) में पदार्पण ।

५ से ८छपैयाधाम में पाटोत्सव प्रमंग पर तथा जन्म स्थान में शिलारोपण विधि प्रसंग पर पदार्पण ।

९. ईडर श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
हरिपुरा गाँव में (ता. ईडर) नूतन मंदिर की खात विधि प्रसंग पर पदार्पण ।

१०. प.भ. विकेनभाई कांतिलाल पटेल के यहाँ पदार्पण, सेटेलाइट ।

१२. प.भ. नीतिनभाई तथा प.भ. भाविनभाई के सहजानन्द विद्यालय (नवा नरोडा) के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण ।
प.भ. कांतिभाई गोपालभाई के यहाँ पदार्पण, नरोडा ।

१६. कासीन्द्रा श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों के) में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१८ से २५. तक लंडन U.K. धर्मयात्रा ।

२६. खोखरा महेमदावाद श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२८. प.भ. राजुभाई आत्माराम पटेल के यहाँ पदार्पण, राणीप ।

विज्ञप्ति

श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के सभी हरिभक्तों को सूचित किया जाता है कि अपने संप्रदाय के देश विभाग के लेख तथा सत्संगिजीवन आदि शास्त्रों के नियम प्रमाणानुसार त्यागी-गृही सभी के गुरु स्थानपर विराजमान धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की आज्ञा ही सर्वोपरि है । यही परंपरा चली आ रही है । इसी प्रमाणानुसार संप्रदाय के किसी गाँव में या मंदिर में संत हरिभक्त के पास दान धर्मादा लेने या कथावार्ता करने आवे तब आचार्य महाराजश्री का आज्ञा पत्र लेकर आवें । इस संप्रदाय की परम्परा का प्रत्येक संत तथा हरिभक्त पालन करें तथा महाराजश्री की आज्ञा का सरलता से पालन हो इसलिए अहमदाबाद देश के गाँव में आनेवाले संत हरिभक्तों के पास से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञापत्र है या नहीं इसकी जानकारी अवश्य करें ।

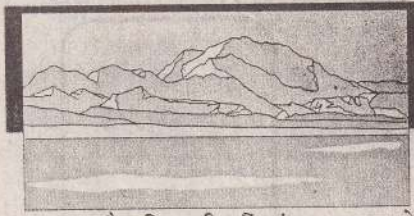
आज्ञा से -
महंत स्वामी

आगामी उत्सव

प.पू. लालजी महाराजश्री का ९ वाँ प्राकट्योत्सव

समस्त सत्संग को सहर्ष ज्ञात करवाना है कि श्री नरनारायणदेव गद्दी के भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री ब्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ९ वाँ प्राकट्योत्सव आषाढ वद-१० (ता. २०-७-०६) गुरुवार के शुभ दिन सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शुभ सांनिध्य में तथा प.पू. बडे महाराजश्री एवं श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में देश विदेश के संत महंत एवं श्रीहरि के प्यारे भक्तों की उपस्थिति में धूमधाम से मनाया जायेगा ।

- महंत स्वामी



श्रीहरि के छठ्ठे वंशज प.पू. बडे महाराजश्री के सांनिध्य में

पवित्र कैलाश मानसरोवर यात्रा

इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण अपने माता पिता के स्वधाम गमन बाद ११ वर्ष की कोमल अवस्था में वन विचरण करना प्रारम्भ किये थे। आज से २१५ वर्ष पूर्व जहाँ इस विश्व का माहान वैज्ञानिक भी नहीं पहुंच सका था। ऐसे भयंकर-विकट हिमालय के दुर्गम पहाडो, नदियों, सरोवरों को पार करते हुए श्री नीलकंठ वर्णी कैलाश मानसरोवर पर पधारे थे, इतना ही नहीं बल्कि अति उग्र तपश्चर्या करके इस मानसरोवर को अलौकिक दिव्य तीर्थ भी बना दिये। जिसका वर्णन स.गु. आधानंद स्वामी ने अपने ग्रंथ श्रीहरिचरित्रामृत सागर के पुर-२, तरंग-२० में इस प्रकार वर्णित किया है - "मानसरोवर महाविशाला, फूल रहे मही कमला लाला, हंस बैठे तेहि तीर अपारा, मोतिन को सब करत चारा, सो सर में हरि नहाये जाई, मगन भये महा हुलसाई जहां रहे हरि पांचहि दीना, सब हंस तेहि दर्शन कीना।" आज २१५ वर्ष के बाद संप्रदाय में सर्वप्रथम श्रीहरिके अपर स्वरूप श्री नरनारायणदेव पीठके छठ्ठे वंशज आचार्यश्री प.पू.ध.धु. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री संत-हरिभक्तों के विशाल समूह के साथ पवित्र कैलाश-मानसरोवर की यात्रा में पधार रहे हैं। जो अपने समग्र संप्रदाय के लिए गौरव तथा अति आनन्द की बात है।

देश विदेश के अनेकों हरिभक्त प.पू. महाराजश्री के साथ यात्रा करने की उत्कंठ व्यक्त किये हैं। यथार्थ रूप से ऐसा समय जीवन में मिलना बड़ा दुर्लभ है। इसलिये यात्रा में आने की इच्छा वाले प्रत्येक हरिभक्त सर्व प्रथम अपना रजिस्ट्रेशन अवश्य करालें।

यात्रा विषयक सम्पूर्ण जानकारी

कुल दिन १६ मार्ग - जमीन मार्ग से काठमांडु-झांग्मु - कैलाश-झांग्मु

१.	३०-९-०६	काठमांडु आगमन - वही ठहरना।
२.	१-१०-०६	पशुपतिनाथजी - बुद्धनाथजी इत्यादि का दर्शन।
३.	२-१०-०६	कांठमांडु से न्यालमजीप द्वारा १५० की.मी. ८ से ९ घन्टे वहीं रात्रि विराम।
४.	३-१०-०६	न्यालम ठहरना।
५.	४-१०-०६	न्यालम से सागा २५० कि.मी. ७ से ८ घटे रात्रि निवास (गेस्ट हाउस)
६.	५-१०-०६	सागा से पर्याग २२५ कि.मी. ७ से ८ घंटे वही विश्रांति।
७.	६-१०-०६	पर्याग से मानसरोवर २५० कि.मी. ९ से १० घन्टे वहीं रात्रि विराम, मानसरोवर गेस्ट हाउस अथवा टेन्ट में।
८.	७-१०-०६	मानसरवोर स्नान पूजा अर्चन वहाँ से दारचेन प्रयाग, रात्रि विराम (गेस्ट हाउस)।
९.	८-१०-०६	जीप द्वारा दारचेन से तारबोचे। यहाँ से कैलाश परिक्रमा का प्रथम दिन प्रारम्भ। तारा बोचे से डीरापुक १२ की.मी. ६ से ७ घन्टे रात्रि विराम टेन्ट में।
१०.	९-१०-०६	परिक्रमा का दूसरा दिन हीरा पुर से डोरमाला होकर झुथुलपुक २१ कि.मी. १० से ११ घन्टे रात्रि विराम टेन्ट में।
११.	१०-१०-०६	परिक्रमा तीसरे दिन तथा अंतिम दिन - झुथुलपुक से होरक्यु मानसरोवर के किनारे ८ कि.मी. ५ घन्टे, रात्रि विराम टेन्ट में।
१२.	११-१०-०६	होरक्यु से पर्याग रात्रि विराम गेस्ट हाउस।
१३.	१२-१०-०६	पर्याग से सागा - रात्रि विराम गेस्ट हाउस।
१४.	१३-१०-०६	सागा से न्यालम रात्रि विराम।
१५.	१४-१०-०६	न्यालम से झांग्मुकस्टम इमीग्रेशन की विधि पुरी को लगजरी वश द्वारा काठमांडु तरफ प्रयाण।
१६.	१५-१०-०६	बस द्वारा काठमांडु से दोपहर में एरपोर्ट पर जाने के लिए रवाना।

प्रति यात्रिक खर्च - ६३०००/- (विदेश रहनेवाले पासपोर्ट धारक) अमेरिकन डोलर २०५१/-

काठमांडु से कैलाश मानसरोवर काठमांडु (इस यात्रा में देश-विदेशके भक्तगण अपने-अपने परिवार के साथ भी आसकते है)

इस यात्रा में १२ वर्ष से ७० वर्ष तक के लोग भाग ले सकते हैं। यात्रा का समय १६ दिन का है। पासपोर्ट होना जरूरी है। यात्रा प्रारम्भ होने तथा पूर्ण होने का स्थल दिल्ली एयरपोर्ट इन्टरनेशनल एयरपोर्ट।

हृदय तथा दम (अस्थमा) के रोगी यात्रा में भाग नहीं ले सकते हैं। ता. १५-९-०६ से पूर्व रजिस्ट्रेशन होना आवश्यक है।

विशेष जानकारी के लिए संपर्क : नीलकंठ टूर्स एन्ड ट्रावेल्स

४१२ ए/बी प्लेटीनीयम प्लाजा, जजीस बंगलो रोड, बोडकदेव, अहमदाबाद-५१,

मो. : ९९२५१२५८५३, ९८९८११४६४६ ● फेक्स :०७९ - २६८४००२८

E-mail : info@neelkanthtoursandtravels.com / Kailasmansarovar99@yahoo.com

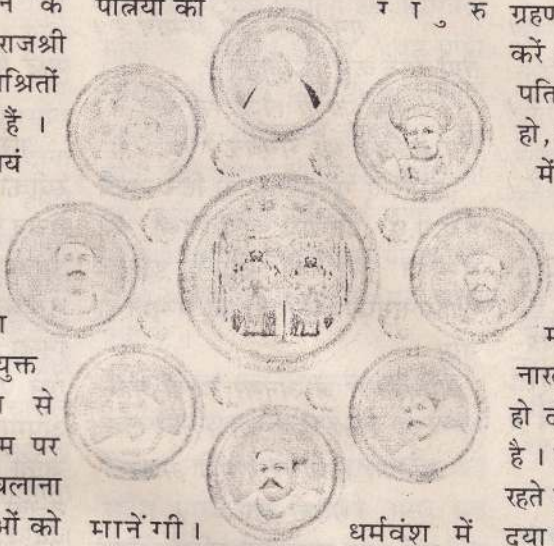
URL : www. kailash-yatra.com

गुरुपूर्णिमा पर्व पर धर्मकुल महिमा का आचमन

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

गुरुपूर्णिमा के पर्व पर प्रत्येक मुमुक्षुजन तथा भक्तजन को अपने गुरुओं के दर्शन एवं पूजन का मन होता है । नरनारायणदेव तथा लक्ष्मीनारायणदेव पीठस्थान के विद्यमान धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री स्वामिनारायण संप्रदाय के आश्रितों के गुरु स्थान पर विराजमान हैं । जिनके नियुक्ति की परम्परा स्वयं स्वामिनारायण भगवान ने किया है । स्वामिनारायण संप्रदाय में स्वामिनारायण भगवान द्वारा प्रवर्तित एकमात्र स्वतंत्र परम्परा है, जो शास्त्रीय प्रमाण से संयुक्त है। कलियुग के प्रभाव से स्वामिनारायण भगवान के नाम पर कोई अन्य गुरु इस परम्परा को चलाना चाहे तो संभव नहीं है । ऐसे गुरुओं को पूजित होना हो तो धर्मदेव के कुल में उत्पन्न होना होगा ।

सत्संगिजीवन चतुर्थ प्रकरण अध्याय ६० में अपने इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान कहते है कि आज से लेकर अयोध्याप्रसादजी एवं रघुवीरजी दोनो को आचार्य के स्म में प्रतिष्ठित किया है । नरनारायणदेव देश के जो हमारे आश्रित हों वे अयोध्याप्रसादजी के शिष्य है । तथा लक्ष्मीनारायणदेव देश के जो आश्रित है वे रघुवीरजी महाराजके शिष्य होंगे । यहाँ उल्लेखनीय यह है कि वर्तमान पीठाधिपति श्री नरनारायणदेव देश के प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री हैं । तथा रघुवीरजी महाराजश्री स्थान पर श्री लक्ष्मीनारायण देव देश की गद्दी पर पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री विराजमान है । उत्तर तथा दक्षिण विभाग में स्थित महिलाये दोनों आचार्य पत्नियों को



मानेंगी । धर्मवंश में जन्में इन दोनो आचार्यो को सम्मान देना, पूजना तथा सामर्थ्यानुसार उन्हें भेट सौगात देना । दोनों आचार्यो की जो सेवा करेंगे वे अन्त में भगवान के धाम को प्राप्त करेंगे । अध्याय ८१ वें में श्रीजी महाराज कहते हैं कि जन्म मरण के भय से युक्त श्रद्धावाले शिष्य धर्मवंशी आचार्य का आश्रय ग्रहण करें । महाराजश्री के चरण में फल अर्पण करके कहना चाहिए कि हे दयालु ? जन्म-मरण के भय से डरा हुआ मैं आपकी शरण में आया हूँ, मेरी रक्षा कीजिये । बाद में शरणागत शिष्य को मंत्र दीक्षा देकर अभयदान देना चाहिए । इसी प्रकार ८३ वें अध्याय में श्रीजी महाराज कहते हैं कि आत्मनिवेदी भक्त दीक्षा ग्रहण करके यथाशक्ति दक्षिणा देकर सुख का मूल ज्ञान गुरु से लेता रहे इसलिए गुरु की सेवा करनी चाहिए।

धर्मवंशी आचार्य की पत्नियों का आश्रय ग्रहण करके स्त्रियां भी दीक्षा ग्रहण करें और भगवान की भक्ति करें। जो स्त्री स्वकल्याण चाहती हो, पतिव्रता धर्मपालती हो, श्रद्धावाली हो, वे स्त्रियां आचार्य पत्नी की शरण में जाये, गुरु पत्नी उन्हें दीक्षा दें । दीक्षा विधि की सुगमता के लिए श्रीजी महाराज ने आचार्यो की स्थापना की है । श्री वासुदेव माहात्म्य में श्री नरनारायण भगवान नारदजी को कहते हैं कि पुरुष या स्त्री हो दोनो ही पूजा विधि में अधिकारी है । जो सदा एकांतिक धर्म में स्थित रहते हों तथा ब्राह्मण जाति के हों तथा दया के सागर हों । अपने गुरु ब्राह्मण हैं । भगवान के बडे भक्त है । भगवान के कुल में उत्पन्न हैं । इसके साथ स्वामिनारायण भगवान द्वारा प्रतिष्ठित भी हैं । इतनी सम्पूर्ण पात्रता ब्रह्मांड में कही अन्यत्र नहीं है । निष्कुलानंद "पुरुषोत्तम प्रकाश" ग्रन्थ का हृदय होगा ऐसा लगता है ।

श्रीजी महाराज कहते हैं कि -

माटे सहु धर्मकुल मानजो,
सहु करजो एनी सेव ।
अन्य जन जेवा एह नहीं,
इन्हें जाणजो मोटा देव ।
एक ब्राह्मण ने जाणो भक्त अति,
वळी का वे अमारु कुल ।
एने सेवतां सौ जन तमो,
पामशो सुख अतुल ।
मनवांछित वात मळशे,
वशी सेवता एना चरण ।

एछे मारी आगन्या,
सर्वे काल मां सुख करण ।
मन कर्म वचने मानजो,
एमा नथी संशय लगार ।
एह धारे माटे अनेकनो,
आज करवो छे उद्धार ।
माटे सो रहजो एने वचने रे,
त्यागी गृही सह एक मने रे ।
रहेजो धर्मवंशी ने गमते रे,
वर्तशोमां कोयेम ने मते रे ।
एह कहे तेम सहु करजो रे,
पूछ्या विना तो पग न भरजो रे ।
हाथ जोड़ी ने रहजो हजूर रे,
करी डांपण पोतानुं दूर रे ।

उपरोक्त आज्ञानुसार त्यागी संत भी महाराजश्री की आज्ञा विना पत्र-तत्र कथापारायण भी न करें । ऐसी कथा में हरिभक्त कथाश्रवण करने न जांये ।

जेम ए वाळे तेम वणज्यो रे,
एनी मानजो सहु आगन्या रे ।
वर्तशोमां कोये वचन विना रे,
एने राजी राखजो तो तमे रे ।
तो तमपर राजी छीये अमेरे,
एने राजी राखशे जे जन रे ।
तेणे अमने कर्या परसन रे,
कां जे अमारे ठेकाण रे छे रे ।
ते तो प्रवीण होय ते पीछे रे,
बीजा जनमने न लहे रे ।
भोला मनुष्य ने भोलाई रह्यो रे,
पण समझवी वात सुधी रे ।
अति मति न राखवी उंधी रे,
वचन द्वारे वस्या अमे एमां रे ।
तमे फेर जाणसोमां तेमां रे,
अमे एमा ए छे अममां रे ।
एम समझो सहु बाई-भाई रे,
एथी अमे उत्णगान रहिए रे ।
एमां रहीने दर्शन दैये रे,
एम समझो सहसुजाण रे ।
अम विना न होय कल्याण रे,
धर्मवंशी आचार जमांय रे ।
सदा रह्यो छुं मारी इच्छाय रे,
अति धर्मवाला जोई जन रे ।
रहेवा मानी गयुं मारुं न रे,
माटे एने पूजें हूँ पूजाणों रे ।
ते तो जरूर जन मन जाणो रे,
एनुं जेणें कर्युं सन्मान रे ।
तेणे मारुं कर्युं छे निदान रे,
एम जाणी लेजो सहु जन रे ।
एम बोलिये श्री भगवन रे ।

इसलिए गुरुपूर्णिमा के दिन अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का सन्मान करें तो अपने इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान का सन्मान हो गया ।

धर्मकुल ने जे अनुसरे त्यागी गृही
नर कोई नार ।
परिश्रम विना ते पामशे अपार
भवनो पार ॥

यहाँ स्वयं भगवानने परिश्रम विना संसार सागर पार करके जन्म मरण में से मुक्ति का उत्तम मार्ग बताया है । फिर भी जगत के मानव इधर उधर भटकते रहते हं । इसमें भी जो तिलक चन्दन वाले भी मन के अनुसार परिश्रम करते रहते हैं, इस से अच्छा तो पुरुषोत्तम प्रकाश के आधार पर इष्टदेव से ही पूछ लेना चाहिए ।

एह आचारज थी अपार रे,
बहुजीवन थाशे उद्धार रे ।
एमां नहि पडे कांई फेर रे,
शीद के वेराणो वेर वेर रे ।

श्रीजी महाराज भी यहाँ कहते है, भाई ? ऐसीवात हमसे क्यों वार वार कहवाते हो ।

पण छेल्लो छे आजे उपाय रे,
बहु जीवतरशे आ मांय रे ।
धर्मवंशी आचारज धार्या रे,
गुरु करी गादी ए बेसार्या रे ।
काम कर्युं छे एह सरुं रे,
मन मान्युं छे बहु अमारुं रे ।
कांजे ए छे धर्मकुल रे,
माटे ए वातनुं उडुं मूल रे ।
जेउं अमारुं कुल मनाशे रे,
तेने तुल्य बीजुं केम थाशे रे ।
माटे विचारी ने वात कीधी रे,
घणुं समझीने गादी दीधी रे ।

गुरु का वाक्य परम आदर से स्वीकार करना चाहिए ऐसा ब्रह्माका वचन है । जो गुरु के वाक्य पालता है उसका देव वाक्य पालन जैसा है । जो गुरु का अनादर करे और शास्त्र की निन्दा करे तो सनत्कुमार कहते हैं कि ऐसे पुरुष नरक में जाते हैं । गुरु का अपमान करने वाले की सम्पत्ति नष्ट हो जाती है । इसलोक में अनेकरीति से दुःखी होते है । सभी लोग अपने गुरु की आज्ञा का पालन करें । गुरु का आदर करें । गुरु की पूजा करें । अन्न, धन, वस्त्र, गाय आदि भेंट दे । कारण यह कि गुरु सर्व देव मय हैं । इसलिए देव की तरह गुरु की पूजा करनी चाहिए ।

हमारे जो आश्रित है वे अपने आचार्य को आते सुनकर आदरपूर्वक तत्काल सन्मुख जाये ।

जब वे वापस जायें तब उन्हें गाँव की सीमा तक छोडने जाये ।।शि.प. श्लो. ७२।।

शिक्षापत्री भाष्य विवेचन में कहा गया है कि, जो गुरु की तरफ चलकर जाता है उसे तीर्थयात्रा का फल मिलता है । गुरु को विदा करते समय गाँव के बाहर तक जो छोड़ने जाता है उसके सभी पाप जल जाते हैं ।

स.गु. प्रसादानन्द स्वामी ने लिखा है कि, श्रीजी महाराजने कहा है कि हमने जहाँ जहाँ मूर्तियों की प्रतिष्ठा की है तथा अब से आचार्य श्री जहाँ मूर्तियों की प्रतिष्ठा करेंगे, उसमें हम सदा रहेंगे । जिसप्रकार आप सभी मेरी पूजा करते है, उसी प्रकार हमारे पुत्र आचार्यों की भी पूजा करना । क्योंकि उनमें मेरा नित्य का वास है । उन्ही में रहकर हम आप सभी की पूजा स्वीकार करेंगे । हमने दत्तक पुत्र लिया है और उन्हें अपनी गद्दी पर बैठाया है । देश विभाग के अनुसार दो गद्दी का विभाजन करके साम्प्रदायिक व्यवस्था को संचालन हेतु यह कार्य किया है । इसलिए आचार्य हमारे स्वरूप हैं । इन्हें हमारा स्वरूप मानकर पूजा करना यही हमारी अंतिम आज्ञा है ।

बाद में श्रीजी महाराज ने कहा "धर्मकुल के आश्रित जो भगवान के भक्त वे भगवान की इच्छा करने से ब्रह्ममय शरीर को प्राप्त करते हैं । जब शरीर का त्याग करके जाते हैं तब भगवान उन्हें गरुड़ पर बैठाकर अपने धाम में ले जाते हैं । इसे योग समाधि द्वारा देखा जा सकता है । (वचनामृत ग.म.प्र. १)

स्वामिनारायण संहिता में श्रीजी महाराज कहते हैं कि मेरा द्वारा प्रतिष्ठित दोनो देश के आचार्यों की सेवा त्यागी - गृही सभी करना । आचार्य की सेवा में हमारी सेवा है । आज से हम दो स्वरूप में हुए । जो आचार्य का द्रोह करेगा वह हमारा द्रोही होगा । जैसी हमारी पूजा सभी लोग करते हैं वैसे ही आचार्य महाराज की सभी लोग पूजा करना । इन्ही की आज्ञा में साधु, ब्रह्मचारी, पार्षद, सत्संगी सभी व्यवहार करना, इनदोनों आचार्यो की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना ।

सत्संग की "माँ" स.गु. श्री मुक्तानंद स्वामी लिखते हैं, जिन्हें धर्मकुल में प्रेम हो तथा जो धर्म में रहकर भगवान की भजन करते हैं ,उन्ही पर भगवान प्रसन्न होते हैं । ऐसे लोग कुटुम्ब के साथ भवसागर तर जाते हैं । धर्मकुल के जो आश्रित हो उन्हे स्वयं भगवान यमत्रास से मुक्त करादेते हैं । अंत समय में श्रीहरि उन्हें दर्शन देकर मरण भय से मुक्त करके स्वधाम में लेजाते है । "धर्मवंश विप्र सत्संग में जब से आये तब से मुक्तमुनि उन्हें सत्संग का मूल समझकर हरिभक्तों से पूजा करवाते, श्रीहरि की पूजा के बाद संत की पूजा का भाव रहता । धर्मवंशी पिता धर्म है, सत्संग के वे ही मूल हैं, ऐसा सभी को समझाकर पूजन करवाते" धर्मवंशी के समान दूसरा कोई नहीं है ।

गुरु तथा संत का जो दोष देखता है, उसका नाश होता है । जो दोष न देखे उसमें भगवान का वास होता है । धर्मवंशी आचार्य मंदिर एवं हरिभक्तों के रखवाले हैं । श्रीहरि अपना प्रताप दोनो धर्मवंशी आचार्यो में निष्यूत किये हैं । मुक्तमुनि के देह परित्याग का समय जब नजदीक आया तो नित्यानंद मुनि को बुलाकर कहा कि उद्धव सम्प्रदाय के दोनो आचार्यो का संसार में सर्वोपरि स्थान रहे ऐसा प्रयास करना ।

आपके प्रताप को ब्रह्माभी नहीं जीत सकते । इसलिए आचार्य को कोई उखाडने आवे तो उसे अपनी तर्क बुद्धि से, संत तथा शास्त्र का सहकार लेकर धर्मकुल की स्थापना करना । श्रीहरि जैसा कोई दूसरा अवतार है ही नहीं, लेकिन जिसका दास्यापाप होगा उस जडमति को इसका ज्ञान होना संभव नहीं ।

श्रीहरि ने अपनी उपस्थिति में धर्मवंशी आचार्यो का माहात्म्य समझाया था । जीव के कल्याणार्थ ही भगवान ने आचार्यपद का स्थापन किया है । धर्म की इस गद्दी पर जो धर्मवंश में आता है उसे श्रीहरि स्वयं पसन्द करके भेंजते है । इसीलिए श्रीहरि के अपर स्वरूप आचार्य को मानना चाहिए। प्रगटप्रभु आचार्य महाराजश्री द्वारा मंत्रदीक्षा लेकर आत्मकल्याण के लिए धर्मवंशी ऐसे आचार्य की चरण शरण ग्रहण करके भगवान की भजन करनी चाहिए ।

देश विभाग के लेख में श्रीहरि ने लिखाया कि श्रीधर्मवंशी की दोनो गादीवाला का स्वजीव कल्याण हेतु आश्रित महिलायें उन्हीं का आश्रय ग्रहण करें, उनके सिवाय इस जगत में कल्याण का कोई उपाय नहीं है । मन-कर्म-वचन से धर्मवंशी की दोनो गादी वाला को मानना एवं उनकी आज्ञा में रहना । इनके आश्रय को छोड़कर किसी अन्य आश्रय को ग्रडण नहीं करना । जो ऐसा करेंगे मेरी आज्ञा का लोप करेंगे उनका इसलोक तथा परलोक दोनो विगड़ेगा ।

श्रीजी महाराज कहते हैं कि आप सभी इन दोनो आचार्यो को धर्मदेव के वंश में उत्पन्न धर्मदेव जैसा ही मानना । यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, आभूषण, वित्त इत्यादि से उनकी सेवा करना । जो ऐसा करेगा उसे भगवान श्री कृष्ण अपने धाम में ले जायेंगे ।

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १०

प्रायश्चित्त

- चंद्रकान्त मोहनलाल पाटक (गांधीनगर)

महात्मा कल्याणदासजी प्रसन्न चित से एकबार अपने धर्मासन पर बैठे थे। तब मुकुंददासजी ने निज मन से व्यथित एक प्रश्न पूछा। मुकुंददासजी उनके प्रिय शिष्य थे।

गुरुदेव ! मुझे काम जीतने का उपाय बताइए।

क्षणभर मौन रहकर दाढी में हाथ घुमाते हुए महात्माजी ने कहा, वत्स ! तुम मेरे हृदय तक पहुँचे हुए शिष्य हो। तुझे मैं अपने जीवन की एक गुप्त बात बताता हूँ।

चालीस वर्ष पहले काशी की यात्रा करके वापस आ रहे थे। उस समय खात्रोज के पास उज्जैन नगरी का मार्ग मैने पूछा। एक युवती अपने गोरे हाथ का इशारा करके मार्ग बताया। मैने उज्जैन का मार्ग पकड़ा लेकिन उस स्त्रीने जैसे मेरी निष्काम भक्ति को ललकारा हो ऐसा लग रहा था। आज चालिस वर्ष वीत जाने के बाद भी उसे हम भूल नहीं सके।

कामका पराभव दुष्कर है लेकिन दुर्जय नहीं है।

भगवान श्रीहरि सरधार गाँव में हरिभक्तों की सभा में गृही त्यागियों को जिसका पालन करना चाहिए ऐसे निष्कामी वर्तमान, निष्काम धर्म, तथा स्त्री पुरुषो में प्रवर्तमान व्यभिचार के विषय में बात कर रहें थे। उन्होंने कहा कि निष्काम धर्म हमें अतिशय प्रिय हैं। एक निष्कामी का वर्तमान दृढ हो तो उसको इस लोक में तथा परलोक में कोई भी हो किसी स्थान पर हो भगवान से दूर नहीं हो सकता। और हमारा भी उस पर से प्रेम कम नहीं होता। सभा बैठी हो और वहाँ कोई



स्त्री अथवा पुरुष कोई भी पाप करके छिपाने का प्रयत्न करे तो भी हमें उसका ज्ञान हो ही जाता है। ऐसा हो तो हमारा उस मनुष्य पर अतिशय स्नेह कम हो जाता है। परंतु क्या कर शकते हैं। प्रीति को जानकर अतिशय कहना नहीं चाहिए। इसलिए जो निष्काम धरम का यथार्थ पालन करता है वही हमारा है। निष्काम धर्म से चलित होने वाले से हमारा नाता नहीं है। एकबार अनजान में भूल हुई हो तो उसे हम मांफ कर देते हैं। प्रायश्चित्त कराकर शुद्ध करायेंगे। जिन्हें सत्संग की चाहना हो, जिसे हमारे साथ सम्बन्ध रखना हो वे मेरे सामने स्वीकार करें। अन्यथा उनका पतन होगा, फिर उनकी सहायता हम नहीं करेंगे।

श्रीहरि की वात सुनते ही सभा में एकाएक बोदा भक्त खडा हो गया। घर जाकर गली में खाट डालकर बैठ गया। प्रभु की आज्ञा से विपरीत वह निष्काम व्रत चूक गया था। हृदय की धडकन बढ गयी थी। अब क्या होगा ? इस विषय में विराट स्वरूप धारण करके विचार करने लगा। निश्चित यह वात महाराज ने ही मेरे ऊपर की है। बार बार मेरी तरफ देखते है। भगवान को तो सब खबर होती है। मेरा नाम सभा में कहदिये होते तो क्या होता ? मेरे गुरु का नाम बदनाम होता। हे प्रभु आपने हमारी इज्जत रखी है। गाँव में किसी को खबर नहीं। लेकिन यह बात कब तक छिपी रहेगी।

वात इस प्रकार थी। विश्व स्रष्टा ब्रह्माजी, भोलेजी, इन्द्र चन्द्रादिकदेव, भगवान के मन नारदजी, उन्हीं के भानजे पर्वत, पराशर, सौभरी, च्यवन ऋषि तथा नहुष वगैरह राजा जो भूमि पर गिरे थे। सत्य व्रत को जानने वाला छोटा मानव भी जमीन पर गिर पडता है। बोदा की विचार धारा आगे चली। मंजी के साथ सम्बन्ध बनाया लेकिन उसमें कोई छलकपट नहीं किया। मैंने उसे ललचाया नहीं। जबरदस्ती नहीं किया। मन को मनाया। इसमें क्या पाप, क्यां अधर्म आया, जो हम समझ नहीं पा रहे हैं। महाराज ने कहा है इसलिए निश्चित कोई पाप हुआ होगा। मुझे अब ऐसा पाप नहीं करना है। अब जब चैतन्य हो ही गये है तो सावधान रहेंगे।

भगवान के पास भूल स्वीकारलें वे जो कहें उसका प्रयश्चित्त करलेगे । फिर भी शांति से काम होजाय तो गाँव में इज्जत बची रहेगी । लेकिन यह अपराध महाराज के सामने कैसे स्वीकार करेंगे । हमारे तथा मंजू के संबन्ध को गाँव में कोई जानता नहीं हैं । महाराज ऐसा प्रायश्चित बतादें कि मैं चुपचाप करलूं और सत्संगी भी बना रहूँ । यह बात जब महाराज अकेले हों तभी कहना ठीक है । कही महाराज नाराज तो नहीं होंगे ? वह इसी उधेडबुन में रहा । रात भर नीद नहीं आई । यह बात कैसे बने यही विचारकर रहा था कि उसी समय ऐसी दैवी प्रेरणा हुई कि मुक्तानंद स्वामी के पास जाकर सब कह दूँ । स्वामी बहुत दयालु है, ममतावाले हैं । गुरु रामानन्द स्वामी के समय से पहचान है । वे निश्चित कोई मार्गदर्शन करेंगे ।

वह निश्चित कर लिया मुक्तानंद स्वामी को मिलने के लिए । खराब कर्म से पश्चात्ताप उत्पन्न होता है और उसी से हृदय की शुद्धि होती है । बोदा का मन अब निष्कामी हो रहा था । प्रातः पूजापाठ करके स्वामी के पास पहुंच गया । वहाँ निष्कपट भाव से सभी स्वामी को सुना दिया । लेकिन जो कुछ हुआ है वह अज्ञान में हुआ है। इसका मैं प्रायश्चित करना चाहता हूँ । इसके लिए मैं आपकी शरण में इसलिये आया हूँ कि हमारी तरफ से महाराज को आप निवेदन करे, मैं प्रायश्चित करने के लिये तैयार हूँ, मेरी गाँव में इज्जत बची रहे ऐसा कुछ आप कर दीजिए ।

मुक्तानंद स्वामीने कहा बोदा भक्त ? दूसरी पत्नी के साथ सम्बन्ध रखना व्यभिचार है । शास्त्रनिंदित है । शास्त्र द्वारा निर्धारित सम्बन्ध का उल्लंघन विनाश की तरफ लेजाता है । फिर भी तुम्हे महाराज के यहाँ ले चलते है, वे दयालु है, किसी के दोष को नहीं देखते, एकबार शरणागति केवल हो जाय ?

हे महाराज ! एक बात करने आया हूँ । क्या बात है ? श्रीहरिने स्वाभाविक ढंग से जिज्ञासा व्यक्त किया ।

स्वामीने कहा, बोदा यहाँ का प्रतिष्ठित भक्त है । गुरु रामानन्द स्वामी का शिष्य है । उसका किसी स्त्री के साथ सम्बन्ध था । लेकिन अब पश्चात्ताप कर रहा है । लेकिन आपके पास आने में संकोच कर रहा है आप जैसा कहेंगे वैसा प्रायश्चित करने के लिये तैयार है । इसकी इच्छा ऐसी है कि गाँव को लोग न जाने और मेरी प्रतिष्ठा बनी रहे । आप इस भक्त पर कृपा दृष्टि कीजिए ।

स्वामी ! श्रीहरिने कहा, 'लोग पाप छिप कर करे, प्रायश्चित भी छिपकर करें ? इस प्रकार तो आज यह या कल दूसरा फिर तीसरा, तो क्या इसे हम चलांलेंगे, यह शास्त्र सम्मत है ? अब आप ही कहिये क्या किया जाय ।

नहीं महाराज, आप समर्थ है, आपकी जैसी इच्छा हो कीजिए मुक्तमुनिने कहा, रामानंद स्वामी का शिष्य हो या अन्य हो, जो पाप करे नीयम का भंग करे, धर्म की मर्यादा का उल्लंघन करे उसको समाज में कहना ही चाहिए । जिससे पुनः दूसरा कोई ऐसी गलती न करे । जिसे चाहना हो वह हम जैसा कहें वैसा करे, जिसे चाहना न हो वह चला जाय । हमें उससे क्या लेनादेना ? कौन है रामानंद स्वामी का शिष्य ? बोलाइये उसे ।

बोदा कमानगर आया, वह हाथ जोड़कर साष्टांग प्रणाम किया । नतमस्तक खड़ा रहा ।

Hate sin but Never Sinner सत्पुरुष कहते हैं कि धिक्कार पाप है । पापी नहीं पापी को शरण में लेकर सन्मार्ग में ले जाना चाहिए । स्वामिनारायण भगवान उसके सामने देख रहे थे, बाद में बोले, भक्त ! आप के ऊपर दो अपराध हैं । आपने हमारे गुरु का भी अपराध किया है । यदि दोष से मुक्त होना चाहते हो, शुद्ध होना चाहते हो, सत्संग में रहना चाहते हो तो हम जैसा कहें वैसा तुम करोंगे ?

हाँ महाप्रभु आप जैसा कहेंगे वैसा ही हम करने को तैयार हैं ? यह पहना कपडा उतार दो । भक्त सम्पूर्ण कपड़ा उतार दिया केवल एक अधो वस्त्र पहनकर खड़ा रहा ।

अधो वस्त्र भी उतार दो । अधोवस्त्र भी उतार दिया । एकदम निर्वस्त्र हो गया । अब सम्पूर्ण गाँव में स्वामिनारायण स्वामिनारायण बोलकर वापस आओ ।

बोदा को थोड़ा संकोच हुआ । लेकिन थोड़ी देर बाद मन में दृढता आयी, कि ऐसा करने से यदि भगवान प्रसन्न होते हों तो गाँव वालों से क्या ? सम्पूर्ण गाँव घूमकर वापस महाराज के पास आकर खड़ा हो गया ।

विश्वाधार ने कहा, अब वस्त्र पहन लो । आपने हमारी आज्ञा का पालन किया है इसलिए निर्दोष हो गये । भविष्य में जहाँ भी जन्म होगा वहाँ अन्न वस्त्र की कमी नहीं होगी ।

बोदा के लिये अब महाप्रभु अति कोमल बन गये थे ।

उसका दूसरा अपराध क्या था ?

सरदार में कीसी को अतिसार हो गया था । उसे कौन सी दवा दीजाय वह रामानन्द स्वामी को पूछा । स्वामीने कहा उसे पौनासेर नमक का पानी पिला दो । वह ठीक हो जायेगा । ऐसा करने से वह तुरत ठीक हो गया । यह बात बोदा की दृष्टि में थी । कुछ समय बीतने के बाद पुनः उसी गाँव में अतिसार किसी को हो गया । उस समय स्वामी वहाँ नही थे । बोदा ने वही उपाय बताया, और कहा कि पौनासेर नमक वाला पानी पिलादो ठीक हो जायेगा ।

कुछ लोगोंने नहीं किया । नमक का पानी अतिसार वाले रोगी को कभी नहीं देता चाहिए, वह विपरीत असर करता है । बोदा भक्त बोला आप क्या समझते हैं ? रामानंद स्वामी अतिसार वाले रोगी को यही प्रयोग किये थे वह ठीक हो गया था । मैंने अपनी आंखों से देखा है ।

रोगी को नमक का पानी पिलाया गया । थोडी ही देर में रोगी स्वर्गीय हो गया । ग्राम के लोगों ने बोदा को भला बुरा कहने लगे । इस प्रसंग से बोदा को स्वामी का अवगुण आ गया था । इसके बाद श्रीजी महाराज का दर्शन हुआ तथा संतो का साहचर्य हुआ और रामानंद स्वामी की महिमा को बार-बार सुनने से उसके भीतर जो दुर्भाव आया था कम होने लगा था ।

बोदा कमानगर श्रीहरि के प्रताप से वहाँ के दरबार का कार्यपालक बना था।

पृष्ठ ७ से आगे

गुरुपूर्णिमा पर्व पर धर्मकुल महिमा का आचमन

अविनाशान्द स्वामी ने लिखा है -

सत्संगी आपो सौ नामनुं
नामनुं नाम नामनुं रे..... टेक
सत्संगी आपो सौ नामनुं,
भातुं अक्षरधामनुं रे २

नामनुं अर्थात् "नामवेरा" दानधर्मादा की रसीद जब फडवाते हैं, उसमें व्यक्ति के नाम से पांच रुपये की भेंट महाराजश्री को प्राप्त होती है । उसके सामने एक कंठी दी जाती है । वह कंठी हमें धर्मवंशी आचार्य द्वारा मिली है । ऐसा समझना चाहिए । यही अक्षरधाम का पाथेय है ।

प्रेमानंद स्वामी ने लिखा है -

चालो चालो रे धर्मवंशीने द्वार,
साहेली मागिये मोक्षने ।
आज ए विना मोक्ष बीजे नथी,
ए छे कलीमां रे मुक्तिना देहना ।
सखी थईये धर्मकुल आशरे रे,
नहीं तो मारशे रे जम बाधीने मार ।
धर्मवंशी विना आ संसारमां,
बीजो नथी रे छोडावण हार ।

ब्रह्मानंद स्वामी ने लिखा है -

हरिना संबंन्धी ते हिरनीज पेटे,
पुरवा योग्य सदाई रे ।
देहधारी सखादीठामां,
एने वातु अतिआधी रे ।
धर्मदेवना वंस नो महिमा,
मुखथी कह्यो नवजाय रे ।
मन मोहनजीना कुटुंबना माणस,
थोडे पुण्य न थवाय रे ।
मायाना जीव ते मर्म न समझे,
सौ सरखा एने जाणे रे .....

गोपालानंद स्वामी ने लिखा है - देव आचार्य तथा अवतारी का सामर्थ्य एक समान है । श्रीजी महाराज के समान सामर्थ्यवाला कोई ब्रह्मांड में नहीं है ।

श्रीहरि संभव काव्य में लिखा है: विषवृक्ष तथा कल्पतरुकी तरह धर्मवंश तथा अन्यवंश में अंतर है । जो दोनों को एक समान मानता है वह कुत्सित बुद्धिवाला है । उसे विमुख समझना चाहिए । सत्संगी भूषण ग्रंथ में लिखा है - (श्रीवासुदेवानन्द वर्णीद्वारा लिखित यह ग्रंथ है) श्रीजी महाराज कहते हैं कि जिस प्रकार मेरी पूजा से आत्मकल्याण होता है वैसे ही दोनो आचार्यो की पूजा से आत्मकल्याण होगा ।

इस प्रकारधर्मकुल की महिमा कोई यथार्थ रुप से लिख अकता नहीं है । इसीलिये लेख का शीर्षक "आचमन" लिखा गया है । लेख को संक्षिप्त करतेहुए भगवान के सातवें वंशज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जो श्री नरनारायणदेव पीठस्थान के अधिपति है, उन्हीं के प्रथम गुरुपूर्णिमा के शुभ अवसर पर अपने इन वाक्यपुष्पो को उन्हीं के चरणों में अर्पित करता हूँ ।

जिस प्रकार प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जिन्होने निवृत्ति ले लिया है जो आपके पिताजी हैं वे जिस प्रकार मेरे उपर प्रसन्न रहते थे । वैसे ही आप भी रहना ऐसी आपके चरणों में कोटि कोटि वन्दन ।

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मदिर में हिंडोला दर्शन

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से आषाढ वद-१/२ ता. १२-७-०६ से श्रावण वद-२ ता. ११-८-०६ पर्यन्त सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव समक्ष भव्य हिंडोला दर्शन का भव्य उत्सव मनाया जायेगा । यजमान बनने के इच्छुक हरिभक्त कोठार की ऑफिस में कोठारी स्वामी के पास नाम लिखाकर रुपये जमाकरके रसीद प्राप्त करलें ।

गुरु पूर्णिमां

- साधु घनश्याम प्रकाशदास
(महंत- नारायणघाट)

पूर्णि अमावस्या के अंधकार को दूर करके प्रकाश फैलाने वाला पर्व है। उसेमें भी आषाढी पूर्णिमा भगवान वेदव्यासजी के जन्मोत्सव पर्व पर श्रद्धासुमन चढाने के लिये गुरुज्ञान का अर्घ्य देने के लिये जिस प्रकार भगवानश्री रामचन्द्रने गुरु वशिष्ठ को तथा ऋषि विश्वामित्र की, भगवान श्री कृष्णन जिस प्रकार सांदीपनिजी के आश्रम में रहकर सेवा-पूजा की थी आरुणि, उपमन्यु तथा सत्यकाय जाबाली तथा गुरु भक्त एकलव्यकी परंपरा भारतवर्ष में वर्षोंतक गायी जाती रही है। भगवान श्री स्वामिनारायणने भी ब्रह्मवेत्ता सदगुरुवर्य श्री रामानंद स्वामी को उद्धव अवतार मानकर गुरुपदका गौरव देकर उन्ही की शरण ग्रहण किये थे। इतना ही नही गुरुभक्तिका उत्कृष्ट उदाहरण दिया था। खंभे को बाहो मे भरकर मुकतानंद स्वामी जैसे संतकी आज्ञामे रह कर अपने आश्रितो के लिये गुरु के लिये शरणागतिकी अनिवार्यता बताइ।

आदिकाल से वेदमें तीनो देव को गुरुपद देकर गुरु साक्षात परं ब्रह्म है एसी प्रथम वंदना की है इतना ही नही गुरुको मंगलरुप कहा है, गुरुके वाक्य मंगलरुप है। गुरुके वचनको मोक्षाधायक कहा है इसी तरह कबीरजी कहते है।

गुरु गोविंद दोऊ खड़े काफे लागूं पांय।
बलिहारी गुरुदेवकी गोविंद दियो बताय,

कच्चे घडेको जिस प्रकार कुम्हार पीटकर उसको जैसे चाहता है वैसे बना देता है, ठीक वैसे ही गुरुशिष्यको जैसा चाहता है वैसे बना देता है। ऐसे गुरुपर शिष्य अपना सबकुछ न्योछावर कर देता है। जिदंगीकी ढलती संध्यामें प्रभु आगमन के उषाकी बाट देखती शबरी मां का समग्र जीवन गुरुवचनके कारण बीत गया। हजारो वर्षो तप करते जिन ऋषियो के बीत जाते है। सम्पूर्ण योगियो की योगकला जहाँ विश्रांत हो जाती है, फिरभी वासनाको विश्रांती नही मिलती, उस समय सदगुरु रुपी सूर्य प्रगट होकर सामने देखते है तब जीवका कल्याण हो जाता है निष्कुलानंद स्वामी ने लिखा है

आगे तपस्वी तपशा करता रह गई किचित काया।
ते ही कारण आ नरतन धरीवा मो जानत है रामा।
मैं हू आदि अनादि आ बो सर्वे उपाधि॥
सदगुरु मिलिया अनादि मिट गई सर्वे उपाधि।

भगवान स्वामिनारायण ने भी वचनामृत ग.प्र. ५४ वे मे मोक्षमार्ग के दरवाजे को खोलते हुए कहां है कि इस जीव को देह का तथा देह के संम्बंधियोके साथ जैसे दृढता के साथ सम्बंध हो जाता है वैसे हि दृढता, ज्ञान, वैराग्य, एकांतिक भक्तो के साथ स. गु. सन्तवर्य के साथ हो तो जीवका मोक्ष होजाता है इसीलिये भगवान स्वामिनारायण ने सत्संग करने का आदेश दिया था। वचनामृत ग. म. ७वे मे लिखते है कि कोई बडा संत हो उसकी अतिशय सेवा हो जाय तो भगवान उस पर प्रसन्न होकर दृष्टि करते है, जिससे उसके सभी विकार नष्ट हो जाते है। सभी विकार, सभी दोष, संतोके साहचर्य से दूर हो जाते है गुरुवर्य के विना मानव जीवन का कल्यान होना संभव नही है। अगत्राईमे पर्वतभाई के यहां प्रभु पधारे उस समय प्रसादकी थाल मे प्रेमी भक्त ने छोलकर सुव्यवस्थित करके थालमे रखे उसके साथ गेहूं का मिष्टान भी रखे। उसमे प्रसाद सभी सभाजन को देने लगे सभी दोडा दौडी करने लगे लेकिन प्रजाने प्रसाद पर्वतभाईको देने के लिये हाथ बढाया तो भक्तने ना कर दिया प्रभुने पूछा क्यो ? जब तक हमारे इष्टदेव भोजन न करे तब तक हम कैसे करे ? भगवानने कहां हमतो भोजन कर लिये कहिए तो और जिये ऐसा कहते हुए टुकडो को मुखमे रखकर चूसने लगे। भक्त को यह देखकर आनंद आरहा था।

उधर भक्तको भगवान की नाडी हाथ लग गई। भगवानको पहेचानने का अवसर मिल गया। आजतो भक्त के हाथ मे भगवान का हाथ मिल गया। "आपको कौन पहचानता था महाराज ? ये तो इन सदगुरु संतो को मिल गये और उनके सहकार से आप पहचान मे आये तभी आज हमारे आंगन मे ऐसे लीलाके अवसर आए है। इसीलिये आपही बताइए की मेरे

अनुसंधान पृष्ठ नंबर २०

॥ श्री स्वामिनारायणाय नमः ॥

श्री नरनारायणकृपा लब्धजन्मनां स्वामिनारायण संप्रदायाचार्याणां १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसाद हृदय श्री १००८ कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजानां शुभाशंसनात्मकमष्टकम्

मंगलाचरणम्

तार-हार-हीर द्युतिस्त्रचिजित कोटि रतीश ।
सुर-नर-मुनि सेवित चरण, जय द्वारिकाधीश ॥

चतुर्थ चरण गुप्तछन्द

भारतं शोभितं नौमि युक्ति प्रदम्
भारते भारती नौमिमूर्ति प्रभम्
शाश्वतंयातियत्रस्थभूतिश्चिरं

रत्नोष्णीषधरंसौम्यं - विद्वद्भिः परिपूजितम् ॥
स्वामिनारायणं वन्दे - छपिया ग्राम भूषणम् ॥१॥
रोलिकां वल्लभप्रेषणं - मस्तके धारणप्रियम् ॥
स्वामिनारायणं वन्दे - छपिया ग्राम भूषणाण् ॥२॥
तुलसी मालिनंनित्यं - वैष्णवानां शिरोमणिम् ॥
स्वामिनारायणं वन्दे - छपिया ग्राम भूषणाण् ॥३॥
विशिष्टाद्वैतसिद्धान्त - तत्वानां सुविवेचकम् ॥
स्वामिनारायणं वन्दे - छपिया ग्राम भूषणाण् ॥४॥
लक्ष्मीराधायुतं कृष्ण - चिन्तने सर्वदा रतम् ॥
स्वामिनारायणं वन्दे - छपिया ग्राम भूषणाण् ॥५॥
सौराष्ट्रे गुर्जरे देशे विदेश धर्म वर्धकम् ॥
स्वामिनारायणं वन्दे - छपिया ग्राम भूषणाण् ॥६॥
व्रजेवृन्दावने कृष्ण जन्म भूमौ सदारतम् ॥
स्वामिनारायणं वन्दे - छपिया ग्राम भूषणाण् ॥७॥
सरयू दर्शनोत्कंठाधरं विप्रकुलोद्भवम् ॥
स्वामिनारायणं वन्दे - छपिया ग्राम भूषणाण् ॥८॥
मुम्वय्यां रात्रिवासञ्च कृत्वादर्शनमद्भूतम् ॥
रचितं चाष्टकं प्रीत्या - वासुदेवेन शास्त्रिणा ॥९॥
वर्षे नेत्ररसाऽभ्रमक्षि वैक्रमे चैत्रकेऽसिते ॥
सप्तम्यां वुधवारेच स्वप्ने चाष्टकं कृतम् ॥१०॥
स्वामिनारायणाचार्य - श्री तेजेन्द्र वुधोत्तमैः ॥
प्रेरणाचपुनर्दत्ता रचितं तस्यचाष्टकम् ॥११॥

श्री १००८ श्री कोशलेन्द्र महाराजनां चाष्टकम् ॥
श्री तेजेन्द्रप्रसादानामात्मजंशास्त्र भूषणम् ॥१॥
कोशलेन्द्र महावीरं - भक्ति भावप्रपूरितम् ॥
स्वामिनारायणाचार्यं - गाद्यस्थंप्रणमामि वै ॥२॥
कौशलेन्द्र कृपा लब्ध - कौशलेन्द्र वुधोत्तमम् ॥
स्वामिनारायणाचार्यं - गाद्यस्थं प्रणमामि वै ॥३॥
कालूपुरामदाबाद - भूषणं जनता प्रियम् ॥
स्वामिनारायणाचार्यं - हृद्यस्थं प्रणमामि वै ॥४॥
धर्मकर्मरतं नित्यं - सच्चरित्रप्रकाशकम् ॥
स्वामिनारायणाचार्यं - हृद्यस्थं प्रणमामि वै ॥५॥
सम्प्रदायस्य रक्षायां - धर्माविष्ट महामतिम् ॥
स्वामिनारायण चार्यं - हृद्यस्थ प्रणमामि वै ॥६।
प्रसन्नवदनं शातं - दिव्यदेह प्रमायुतम् ॥
स्वामिनारायणाचार्यं - हृद्यस्थं प्रणमामि वै ॥७॥
भारते च विदेशे च - भक्तेषूत्साहवर्धकम् ॥
स्वामिनारायणाचार्यं - हृद्यस्थं प्रणमामि वै ॥८॥

पद्य

भरत मति वितारी ज्ञाति सेवाप्रकारी
चलत रमणकारी छपैयानामधारी
निज जन सुखकारी विज्ञ विद्याप्रभारी
निजगुणबलधारी भारतानन्दकारी
श्री कोशलेन्द्र चिरायुरस्तु

पू.पी. रत्न वी. कृ. चतुर्वेदी

मन मान से बच

- पार्षद घनश्याम भगत गुरु जगतप्रकाशदासजी (धोळका)

आध्यात्मिक मार्ग से वतन होने का कारण मानही है मान वैसे देखने मे मात्र दो अक्षर का शब्द है परन्तु यह बडा दुर्गुण है । आज हम सब हजार, पांच हजार, दस हजार का दान देकर मान की अपेक्षा करने लगते है, कि मुझे फूलमाला पहनाई जाय मेरा सम्मान हो मेरे नाम की तखथी लगाई जाय पर आपको पता नही है कि यह विचार कितना खतरनाक साबित होगा। जरा आप भविष्य मे जाइये और सोचिए कि आज जिस दिवाल के सहारे इस क्षण भंगुर देह के नाम की तकथी लगा रहे है क्या वह दिवाल रहने वाली है ? वैज्ञानिको को भी पता है पहले यह पृथ्वी नही थी और आने वाले दिनो मे नही होगी क्योकिं पृथिवी की आयु मात्र साढे चार अरब से पाँच अरब तक है इस बात से साबित होता है कि यह जो दिखाई देता है वह सब नासवंत है लोग कहते है कुछ ऐसा करना चाहिए कि सात पीढी याद करे पर जब आपकी पीढी नही रहने वाली हे तो फिर आप किसको दिखाने के लिए करते है हम सबको पता नही कि जिस मस्तिष्क से हमारे शरीर का संचालन होता है उस मस्तिष्क मे माया ने एक भ्रम बैठाकर एक लधुग्रन्थि बान्ध दिया और मस्तिष्क पर ताला लगा दिया है और उस ताले की चाभी समुद्र में फेंक दी है जिसे हम अनेक जन्मोंतक नहीं प्राप्त कर सकते अगर हमारी कोई मददत करता है जैसे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री या फिर कोई संत तो उनके साथ रहना पसन्द नही करते हम बकरी कि भांति जोर-२ से चिल्लाने लगते है बकरी को पालने के लिए कस्साई मारने के लिए ले जावे तो जोर-२ से चीख लगाती और मानी लोग कायर की भांती होते है अगर जरासी ठोकर लगी की तुरन्त टूट जाते है पर हमारे धर्म गुरुमहराजश्री एवं संत लोग मिलके हमे लोहा बना देते है और मस्तिष्क पर लगे ताले की मास्टर चाभी भी देते है, आज जानना चाहेगे कि वह मास्टर चाभी क्या है ? वह मास्टर चाभी यह है कि दादा खाचर कि कुछ जमीन जीवा खाचर ने लेली थी उसको वापस देने की बात श्रीहरिने की पर नही माने फिर श्रीहरिने भगुजी आदि को आदेश दिया आप वह जमीन दादा खाचरजी को वापस दिलाये और यह बात एक आदमी और सुनी जिसने जाकर जीवा खाचर को बताई जीवा खाचरने तुरन्त वहाँ वदमास लगा दिये इधर भगुजी आदिने जमीन पर विजय प्राप्त किया और विजय प्राप्त करके वापस श्रीहरि के पास गये, श्रीहरि सभा में विराजमान थे श्रीहरि तुरन्त सिंहासन से खडे हो गये और जिस आदमी ने जीवा खाचर को जाकर बात कही थी उसको श्रीहरिने बुलाया वह आदमी तो डर गया उसे श्रीहरिने कहा आप जल्दी आइए मैं आप से भेंटना चाहता हूँ और वह करीब आया श्रीहरि भेट पडे फूल माला पहनाई और बहुत प्रशंसा करने लगे तब किसीने भगुजी से कहा माला तो आपको पहनानी चाहिए प्रशंसा भी आपकी करनी चाहिए पर श्रीहरि ऐसा क्यो कर रहे है श्रीहरि तो अंतर्यामी हैं तब आपको पता है ? भगुजी ने क्या कहा वह कहें अगर श्रीहरि भगुको माला पहनाते तो भी श्रीहरि ही पहन रहे थे । अगर उस आदमी को पहनाते है तो भी श्रीहरि ही पहन रहे है इस लिए यहाँ शोक की आवश्यकता ही नही, बस यही मास्टर चाभी है जिससे हम अपना मस्तिष्क खोल कर अपने भ्रम को नाबूद कर सकते है हम सब श्रीहरि के चरणो में प्रार्थना करे प्रभु आज मुझे भगुजी के जैसी विचार शक्ति प्रदान कीजिए एवं वह विचार शक्ति जीवन में उतरे ऐसी कृपा कीजिए ।

नारायणघाट मंदिरमें दिव्य कलात्मक झूलेका दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की ज्ञा से नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर में भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथो से ता. १६-७-०६ रविवार को प्रातः ९-३० बजे ठाकुरजी के समक्ष कलात्मक हिंडोला (झूलोत्सव) एवं भोजनालय का उद्घाटन धूमधाम से मनाया जायेगा ।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में अधोनिर्दिष्ट कार्यक्रम किये जायेंगे ।

: कीर्तन भक्ति :

प्रातः ८-०० से ८-३० तक ।

: कथावार्ता :

प्रातः ८-३० से ९-३० तक

वक्ता : पूज्य पी.पी. स्वामी जेतलपुर

सत्संग भावपाठिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

बर्फ में आग लगेगी क्या ?

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

समये से कीमती पलंग खरीदी जा सकती है, लेकिन नींद नही ।

समये से भोजन खरीदा जा सकता है, लेकिन भूख खरीद नहीं सकते ।

समये से बडा मकान खरीदा जा सकता है, लेकिन सुख नहीं ।

सुख समझ में है तथा संत के पास से सीखने के बाद मिलता है ।

उदाहरण - मुक्तानंद स्वमी को मारने के लिए असुर भाला, त्रिशुल लेकर आये । क्रोधावेश में आकर बोलने लगे कि कहाँ है, मुक्तानंद ? परंतु शांति मूर्ति मुक्तानंद स्वामीने शील वाणी से सभी को शांत करदिया। कोई कुछ नहीं किया । मित्रों एक उदाहरण दूसरा देखिये ।

महाराष्ट्र में एक महात्मा हो गये । बडे प्रसिद्ध महात्मा थे । जिनका नाम तुकाराम था । उन्हों ने बहुत सारे काव्य बनायें । जिसे मराठी भाषा में अभंग कहा जाता है । बडे भक्त पुरुष थे । बडे उदारात्मा थे । सदा खुश हाल रहते थे । लेकिन उनकी पत्नी थोडा दूसरे प्रकृति की थीं । दोनो में आकाश-पाताल का अंतर था । दोनो प्रकृति से भिन्न थे । फिर भी तुकारामजी सहन करते रहते जिससे गाड़ी चलती रहती ।

एक दिन तुकारामजी कहीं बाहर गये हुए थे । घर आने में थोडा बिलम्ब हो गया । इसीलिये पत्नी घर के बाहर बार-बार आकर देखती कि कहाँ गये और क्यों बिलम्ब हो रहा है उधर एक किसान बैल गाडी में गन्ना भरकर ले जा रहा था, उसकी नजर तुकाराम जी पर पड़ी, उसे पता था कि तुकारामजी बड़े अच्छे महात्मा है । इसीलिए बैलगाड़ी को खड़ी करके पैर पर गिरकर एक गन्ने का बोझ तुकारामजी को दे दिया । उसे लेकर वे घर चल दिये । पत्नी देखकर खूब प्रसन्न हुई । इसीलिए कि बडी शांति से गन्ना को चूसेगें । उस जमाने में लोगों के दांत मजबूत होते थे । वे बोझा लेकर घर आ रहे थे । लेकिन तुकारामजी रास्ते में खेलते हुए बच्चों को एक-एक करके गन्ने सभी में बांट दिये । उसमें से एक गन्ना बच गया । जिसे लेकर वे घर आये । यह सभी दृश्य पत्नी देख रही थी । अब तो उनके क्रोध की सीमा ही नहीं रही । क्योंकि वे अभी सोंच रही थी कि खूब गन्ना चूसने को मिलेगा यहाँ तो पति देव सभी गन्ना बच्चो में बांट दिये । आग के अंगारे की तरह बरसती हुई उनेक हाथ से बचे उस गन्ने से तुकारामजी को सड़ाक से जोर से मारा, वह गन्ना दो टुकड़ा हो गया । फिर भी तुकाराम जी हंसते ही रहे । ऐसी परिस्थिति में जो हंसता रहे उसे महात्मा कहते हैं । हंसते हुए पुनः बोले पत्नी नाराज हो वह ठीक नहीं । मुझे विश्वास था कि मेरी पत्नी अकेले गन्ना नही चूसेगी वह मुझे अवश्य देगी । तुमने दो भाग करके आधा मुझे दे दिया अब बताओं ऐसे महात्मा को कौन गर्म कर सकता है ।

मित्रों ! जिसका मन गर्म न हो उसे ही महात्मा कहते हैं । धैर्य की कसौटी हिमालय में नहीं होती समाज में होती है । विपरीत परिस्थिति में भी जिसका मन बर्फ जैसा रहे, अर्थात् जैसे बर्फ में आग नहीं लगती, उसी प्रकार मन में भी क्रोध रुपी आग नहीं लगती । स्वामिनारायण भगवान के प्रताप से पांच सौ परमहंस विपरीत परिस्थिति में शांति-धैर्य को धारण करके स्वामिनारयण भगवान की जयजयकार करवाये थे । मित्रों ! हम सभी उसी मार्ग के प्रवासी हैं, अकारण छोटी-मोटी वातों पर क्रोध करना हमें शोभा देगा ? गाड़ी में जिस प्रकार ब्रेक की आवश्यकता है उसी प्रकार क्रोध पर ब्रेक लगाना आवश्यक है । क्रोध के वशीभूत होकर समाज में बहुत अनिष्ठकार्य हुए हैं यह सभी जानते हैं । इसीलिये इष्टदेव का सहारा लेकर, शास्त्रों का अभ्यास करने से ऐसे विचारों को जीतने से घर में तथा जिंदगी में सुख-शांति, प्रेम, सद्भावना तथा समता बनी रहती है ।

सद्‌गुणों को ताजा रखने के लिये क्या करना चाहिए ?

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

एक राजा था । वह बहुत बुद्धिशाली था । हर विषय की जानकारी रखता था । किसी विषय के लिए बडी जिज्ञासा से पूछा करता । यह कैसे हुआ ? क्यों हुआ ? इत्यादी । वह राजा साधु पुरुषों की सत्संगति करता था । वह जिज्ञासा के कारण ही गुरु बनाया । यदि गुरु ज्ञानी मिलजाय तो उसका कल्याण हो जायेगा । राजा होने के साथ ही उसमें यह भी ज्ञान था कि मन में चाहे जैसी भी शंका हो वह गुरु की शरण में जाने से शांत हो जाती है । वह राजा कुछ समय तक राज्य के उत्तरदायित्व में विशेष फंसा रहा । राजा होने के बाद तो राज्यबार तो रहेगा ही । धीरे-धीरे पूर्ण करके उसने विचार किया कि कितने दिनों से आम्रफल मैंने नहीं खाया । राजा को आमका फल बहुत प्रिय था । राजाने आम की एक पेटी मंगाई, लेकिन उसमें से अतिशय दुर्गन्ध आ रही थी । नौकर ने कहा राजा जी आम सड़ गया है । अरे ! आम सड़ कैसे गया ? कोई बात नही । हमारे घोड़े ले आओ हमे घुड़सवारी करनी है । राजा को घुड़सवारी करने की बडी शौख थी । इसी लिए वह राज्य में बडी घुड़ साल बनाई थी । जिस में उत्तम नशल के घोडे रखता था । नौकर घोड़ा ले आया । घोड़े पर राजा बैठा लेकिन किसी तरह से वह घोडा चलने को तैयार नहीं ? राजा को हुआ कि यह अच्छी जाति का घोडा है क्यों नहीं चरता ? बडे क्रोध में राजा उस घोड़े को मारते हुए जंगल तक पहुँचा, और वही विश्राम करने लगा । साथ में भोजन की सामग्री भी ले गया था । उसे भोजन बनाने की भी शौख थी तुरंत ही आंटा सानकर रोटी बनाने के लिए तावे पर रखकर बात करने लगा, इतने में रोटी नीचे से जलने लगी ! राजा ने विचार किया कि यह रोटी जली क्यों ? आम सड गया ? घोड़ा दौड़ा नहीं ? चलकर गुरुजी से पूछते हैं । गुरुजी के पास जाकर बडी नम्रता के साथ वन्दन करके पास बैठा और पूछा गुरु जी मुझे कोई ग्रह तो परेशान नहीं करता है ? अथवा अन्य कोई परेशानी तो नहीं है ? मेरे इन तीन कार्यो में विघ्न क्यों आया ? बाद में गुरुजी राजा से सम्पूर्ण जानकारी करके बाद में बताया कि इसमें कोई चिंता की बात नहीं है । यह सभी स्पष्ट है - प्रथम धारण आमफल का, उसे पेढी में रखे रहे फेरे नहीं इसीलिये सड़ गया । दूसरा घोडा रुका क्यों ? तो, अच्छी नशल का ही घोड़ा क्यो न हो उसे चलाया नहीं जाय केवल बांधकर रखा जाय तो वह भी बिगड जाता है ।

रोटी क्यों जली ? उसे यहि फेरा न जाय तो वह भी जल जायेगी ।

मित्रो ! यह दृष्टांत हम सभी को यह शिखाता है कि जिन्दगी में सतत सावधानी रखनी चाहिए । सद्‌गुणों को, सत्संग को, सेवा को सदा ताजा रखना चाहिए । सोना का आभूषण क्यों न हो उसे भी धोना पडता है, अन्यथा उसमें भी दाग पड़ जायेगी । इसीलिए भगवान स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री में आज्ञा कि हैं कि "कार्य सत्संगोन्वहं सताम्" नित्यप्रति सत्संग समागम करने से सद्‌गुण ताजा होते रहते है और जीवात्मा को सुख मिलता है ।

श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा के विषय में

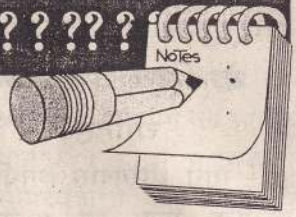
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदावाद द्वारा श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग की परीक्षा आगामी दिसम्बर मास में ता. १७-१२-०६ रविवार के दिन पूर्व निर्धारित केन्द्रो पर लीजायेगी । जिससे प्रत्येक केन्द्र संचालक अपने गाँव- शहेर के विस्तार तथा मंदिरो में चलती धार्मिक परीक्षा की नामावली तैयार करके यहाँ पर निश्चित समय से पूर्व भेंज दे । जहाँ केन्द्र न हो वहाँ नये केन्द्र की स्थापना करने के लिये हरिभक्तों को सूचना है । केन्द्र आरम्भ करनेवाले को धार्मिक परीक्षा का सेट भाग १ से ५ तक दिया जायेगा ।

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग
संचालक श्री, श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद,
समय प्रात: ८-०० से १०-००

संप्रदाय के गौरव

प.भ. डॉ. मयूरभाई रमणभाई (उनावावाला) के चि. कुश इस वर्ष की ली गयी है एस.एस.सी. बोर्ड की परीक्षा में ९४.१४% से उत्तीर्ण हुए है । जिन्हे गणित तथा शा. शिक्षण में १०० में से १०० प्रसांक मिला है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री इनकी उत्तरोत्तर वृद्दि के लिए आशीर्वाद देते हैं ।

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ द्रव्यस्यायो भवेद्यावान् व्ययो वा व्यावहारिके ।
तौ संस्मृत्य स्वयं लेख्यौ स्वक्षरेः प्रतिवासरम् ॥
यह शिक्षापत्री का कौन सा श्लोक है ?

प्रश्न : २ भगवान को प्रसन्न रखने के लिए किन चार साधनो को सदा ख्याल रखना चाहिए ?

प्रश्न : ३ भगवान स्वामिनारायणने ब्रह्मानंद स्वामी को एकवार अपनी धोती दी थी वह धोती किस गाँव के रहीशने बनवाकर दी थी ?

प्रश्न : ४ सहजानंद स्वामीने अहमदाबाद में जब प्रथमवार मंदिर करने का विचार किया तब कितने वर्ष के पट्टे पर जमीन मिली थी ? वह जमीन सदा के लिए लेना है इस लिए ब्रह्मानंद स्वामी को यहकार्य सौंपे । उस समय किसी अंग्रेजी साहब को काव्यकी पंक्ति सुनवाया जिसे सुनकर वह खुश हो गया, वह अंग्रेजी साहब कौन ?

प्रश्न : ५ भगवान स्वामिनारायणने मोक्षधर्म की पुस्तक मंगाकर सांख्ययोग के दो अध्याय की कथा किस स्वामी के पास आरंभ करवाया था ।

प्रश्न : ६ स्वामिनारायण मंदिर प्रांतिज की प्रतिष्ठा किसने की है ?

प्रश्न : ६ श्रीहरि लीला सुधाकर नामक पुस्तक की रचना किस स्वामीने की है ?

मई २००६ महीने के प्रश्नपेटी का सच्चा उत्तर तथा उत्तर देने वालों का नाम ।

(१) विसनगरी नागर ब्राह्मण थे । वे पाक शास्त्रमें अत्यन्त कुशल थे ।
(२) धरमपुरगाँव में रानी कुशलकुंवरबा को परम चैतन्यानन्द स्वामीने सत्संग करवाया था ।
(३) राजस्थान के मोदसम गाँव में जन्म हुआ, उनका सुखानन्द स्वामी के साथ सत्संग हुआ ।
(४) यह प्रश्न श्रीजी महाराजने वाणांक देश के खोभणिया गाँव में आहिर पटेल सामंत को कहा है ?
(५) स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के शिष्य थे ।
(६) इस पद के रचयिता ब्रह्मानंद स्वामी हैं ।
(७) मां राधिकाजी का जन्म भाद्र शुक्ल अष्टमी के दिन भ्रणुमाण कलावती के यहाँ वरसावा गाँव में हुआ था ।

१. कात्रीडीया उर्मिलाबहन नवीनचंद्र (राजकोट)
२. सविताबहन कांतिभाई पटेल (विशनगर-ओढव)
३. गोरधनभाई शंकरदास (सोजा)
४. सोनी भगवानदास बेलजी (मोरबी)
५. माधवजी हरजी आद्रोजा (मोरबी)
६. श्री स्वामिनारायण मंदिर बहनोका (मोखासण)
७. गीताबहन रमेशभाई शींगाडा (बापुनगर)
८. काछडीया राधिका बापुभाई
९. श्री स्वामिनारायण मंदिरके हरिभक्त (बापुनगर)
१०. कैलाशबहन विष्णुभाई पटेल (नांदोल)
११. साकरबहन नटवरलाल पटेल (नांदोल)
१२. सारदाबहन कांतिभाई पटेल (नांदोल)
१३. अंजनाबहन मनुभाई पटेल (नांदोल)
१४. कोकिलाबहन नटवरभाई पटेल (नांदोल)
१५. कंचनबहन, नीलेष, शैलेष (रतनपर-मूली)

नोंट : प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है । इसके बाद को आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा । जिसको सभी लोग जानलें ?

।। भक्तिसुधा ।।

भगवान जैसे है वैसे हि उन्हे पहचाना चाहिए ।

- रमीलाबेन के मोदी (हिंमतनगर)

अरोडा गाव में प. पू. अ. सौ. गादीवाला ने पधारकर सभी को अलौकिक दर्शन का तथा गुरुमंत्र का लाभ प्रदान किया । उसके बाद प. पू. लालजी महाराजने आशीर्वचनमे कहां कि महाराज और संतो की सभा बैठी थी । महाराजने सच्चीदान स्वामीको कहां कि मुकतानंद स्वामी की तरह मेरी आरती उतारो । सभी संतो ने इनकार किया । महाराजने सच्चीदानन्द स्वामीको विमुख किया । और एक के बाद एक सभी संतो को विमुख कर दिया । सभी संतगण सच्चीदानंद स्वामी के साथ मिल गये परंतु वे मुकतानंद स्वामी की सेवा नही की । महाराज और मुकतानंद स्वामी ने आपस मे चर्चा की और वे दोनो संतो के साथ बैठ गए । भगवान ने सभी संतो की परीक्षा की जिससे संतो के मस्तक झुक न सके ।

शिक्षापत्री श्लोक ७४ के अनुसार ऐसे महान पुरुषने जो अधर्माचरण किये हीं तो उनका अनुकरण नही करना चाहिए । और धर्माचरण किया हो तो उसका अनुकरण करना चाहिये । इस अनुसंधान मे उपदेश दिया ।

भक्तिमाता घनश्याम महाराजको कहती है कि जगत के कल्याण के लिये साक्षात् परमात्मा हमारे घर पुत्र रुप प्रगट हुए है हे प्रभु ! अहंता और ममता दूर हो शके आपकी माया के बंधन छूट शके ऐसा उपदेश दीजिये ।

भगवान कहते है कि मां, मेरी माया को पार करना कठिन है । जो भक्तजन संतगण का सत्संग करके मेरी भक्ति करता है । वही मेरी माया से पार हो सकता है । संतका समागम करके धर्म, ज्ञान, वैराग्य के साथ भक्ति करता है वही मेरी माया से पार हो शकता है । इसके अलावा मेरी माया पार होना कटिन है । सभी जीवो को परमात्मा का उपदेश प्रदान करने मे कुशल हो शास्त्रो का अभ्यासी हो परमात्माकी आमा मान ने मे जिसे अत्यंत प्रेम हो, और प्रभु के ध्यानमे परायण हो । ऐसे लक्षणवाले महात्माओ को भगवान के प्रति प्रीती होती है । ऐसे संतो से जिसे भेट हो जाती है उनके लिये मोक्षका द्वार खुल जाता है ।

महान ईश्वर भी जिसका पालन करते है । कोई भी जीव ज्ञानी हो या अज्ञानी हो जो भी हो उसे धर्मका पालन करना चाहिये । मानवी में ब्राह्मण ही उतम है । ब्राह्मण से भी उतम धार्मिक मनुष्य होते है । और उससे भी परमात्मां का एकांतिक भक्त उत्तम होते है । कयोकि ऐसे भकत के हृदयमे भगवान निवास करते है । जो वस्तु जैसी हो उसे वैसे ही पहचाननी चाहिए उसका नाम ज्ञान होता है । इस शरीर मे आत्मा और परमात्मां का निवास होता है । देहकी वृद्धि होती है या नाश होता है उसके साथ आत्मा कि वृद्धि नही होती और नाशभी नही होता । भगवान श्री कृष्ण परमात्मां है दिव्य गुणो से युक्त है । माया या माया के कार्यो से भगवान अलिप्त है । इस कारण से प्रभु को निर्गुण कहां जाता है । भगवान स्वतंत्र है स्वप्रकाश है । सर्व के कारण भूत है । अनेक भक्तो के लिये उपासना योग्य है । अक्षरब्रह जिसका धाम है । और जीवो का कल्याण करने के हेतु अवतार धारण कियां है ।

भगवान के अलावा दूसरे पदार्थमे प्रेम न हो उसका नाम वैराग्य । ऐसे वैराग्यकी उत्पत्ति लोगो के दु:ख और नाश देखने के लिये होती है । नित्य प्रलय और निमित्त प्रलय और प्राकृत प्रलय तथा आध्यात्मिक प्रलय । यह चार प्रकार के प्रलय मे सर्वका नाश हो जाता है । और भगवान मे प्रेम होना चाहिये । प्रेमपूर्वक भगवानकी सेवा करना इसी का नाम भक्त होता है । भगवान के अवतारो और भगवान के भक्तो की कथा सुनना इसी का नाम श्रवण भकित है । भगवान की मूर्तिका हृदयमे स्मरण करना और प्रभु मंत्रका जाप करना उसे स्मरण भक्ति कहते है । परमात्मा पत्यक्ष हो तब प्रभु के चरण दबाना उसे वाद सेवन भक्ति कहते है । समयानुसार स्वयमको जो मिले उस उपचार से भगवानका पूजन करने की भावना का अर्थ अर्चन भक्ति है । पुरुषगण द्वारा साष्टांग प्रणाम और स्त्रिओ के द्वारा पंचम प्रणाम का आचरण करना ही वंदन भक्ति है । भगवान के लिये चंदन घिसना, पुष्प लाना, प्रभुके लिये भोजन बनाना,

भक्तो की सेवा करना, और अपने संबंधियों से अधिक भगवान में स्नेह रखना वही दास भक्ति है ।

परमात्मा कि प्रति अर्जुन और द्रोपदी की तरह मित्र भाव निभाना उसे सखाभक्ति कहते है । इस नवधाभक्ति से ईश्वर आराधना करनेवाला ही भक्त होता है । ऐसा भक्त भगवान के धाम मे जाता है तब परमात्मा के मुखकी वाणी सुनकर भक्तिमाता बोली की हे हरि ! भगवान की भक्ति करनेकी जो बात आपने की वही साक्षात भगवान हरी ऐसे नाम से ही मेरे सामने खडे है । और भक्तिमाता स्तुति करती है ।

सर्व सहावन घनंजय गंधवाहा
नंतार्य माम्बुजे हरामृत वाहमित्रे ।
सत्प्रेम वत्युहित साधु गुणात्मानिष्ठे
बुध्धिः सदात्वधि हरम मनिश्च वास्तु ॥

हे भगवान ! अज्ञानस्मी अंधकार दूर करने में आप सूर्य के समान है । अनंत अवतार आपने धारण किये है । इस बार भी धर्म साधुपुस्मो और ब्राह्मणो और गायो का रक्षण करने के हेतु आप प्रगट हुए है । आपके स्वस्म मे दृढ भक्तिवाले संतो का गण है । ऐसे संतो मे जिसे अत्यंत प्रेम है ऐसे और पापो का नाश करनेवाले ऐसे पवित्रनाम वाले हे प्रभु ! मेरा मन संदैव आपके स्वस्म मे लीन रहे ! (सत्संगी जीवन के आधार से)

गढडा अंत्य ३७वे वचनामृत में श्रीजी महाराजने सभी हरिभकतो के प्रति ऐसी बात की कि जिसे भगवानके स्वस्म का यथार्थ ज्ञान एकबारभी हो गया हो और उसके बाद देशकाल क्रिया, संग विशम हो जाय फिर भी ज्ञान का लेश मात्र नाश नही होता । जिस तरह कोई राजा होता है लखशाही शाहुकार हो उसे प्रारब्धनुसार वह अधिकार छुट गया और दरिद्रता आ गई जिससे भारी भारी चीजे खाई हो और उसे मूल्यवान चीज न मिले और मांगकर खानी पडे और जो प्रथम से ही जैसा तैसा अन्न खाया हो उसे अधिक दरिद्रता आए तो वह वही भोजन करेगा उसे कोई फर्क नही पडेगा । उसी तरह जीसने भगवान के स्वस्म का सुख और भजन का सुख अपने मन में एकबार यथार्थता से समझा है उसे प्रभु का समागम अधूरा प्राप्त हो तो उसे सुख के बदले दुःख मिलता है । लेकिन जिसने भगवानका सुख जाना ही नही फिर उसे कैसा अनुभव होगा । उसे क्या दुःख होगा । वहतो पशु जैसा है । भगवान के स्वस्म का ज्ञान वह है जो भगवान का जैसा आकार है वैसा आकार दूसरे देव मनुष्यादिक की प्रतिमा से साकार हुए है वह किसी का नही है । भगवान के बिना काल भक्षण कर लेता है उस काल का सामर्थ्य भगवान के सामने नही चलता है । ऐसे तो प्रभु है और दूसरे कोई भगवान नही है ।

एक शिष्य गुस्को पूछता है कि प्रभु को प्राप्त करने के लिये मुझे क्या करना चाहिये ? गुरु कुछ बोलते नही है । परंतु स्नान करने के हेतु नदी तट पर जाते है । तब शिष्य को साथ चलने को कहते है । दोनो स्नान करने के लिये नदी मे प्रवेश करते है । पानीमे डूबने लगता है । परंतु गुरु उसे देखते ही रहते है, शिष्य पानी मे डूब जाता है और फिर बाहर आता है । तब वह बचाव बचाव की चीख लगाता है । परंतु गुरु उसे देखते ही रहते है । शिष्य फिर पानी मे डूबने लगता है । बडी मुश्कील से वह गुरु पर थोडा क्रोधित होता है । गुरु शिष्य से पूछता है तू पानी मे डूब रहा था तब क्यो छट पटा रहा था ।

शिष्यने उत्तर दिया कि श्वास पाने के लिये । प्रभु को पाने के लिये तुझे इसी तरह से प्रयत्नपूर्वक छट पटाना होगा । जिस तरह शरीर के लिये श्वास आवश्यक है उसी तरह से मनुष्य के लिये इश्वर जरुरी है ।

●

"स्वरछ" करना है ।

- (तरुणाबहन अतुलभाई पोथीवाला)

महाराज सभा भरकर बैठे थे । ऐसे मे धरमपुर के कुछ भक्तो का संघ आगे आया । संघमे से एक कमोद की बडी पोटली महाराजके चरणो मे रख दी । महाराजने पूछा "यह क्या लाये हो ? "

भक्तने कहा "महाराज ! धरमपुरके राजरानी कुशळकुवरबा ने स्वंय अपने हाथो से छीलकर यह कमोद चावल को भेजा है । और धरमपुर पधारने के हेतु आपको निमंत्रण भेजा है ।

पोटली खोलकर देखातो उसमे सफेद दूध जैसे सुगंधीदार शुध्ध चावल की एक मुठ्ठी हाथ मे लेकर महाराज ने सभी को दिखाया । फिर पूछा । "यह क्या है ? " सभीने कहां महाराज यह चावल है महाराज ने तीन बार पूछा "यह क्या है ?" सभीने "हा यह चावल ही है " ऐसा ही बार-बार कहा ।

इस कारण से मुक्तानंद स्वामीने पूछा "महाराज आपने तीन बार चावल बताकर पूछा यह सब क्या है ?" इसका क्या रहस्य है ?

महाराजने कहां "कुशळकुवरबा ने हमारे लिये यह भेट भिजवाई है । यह उनका वैभव है । वह जैसा राज का है वैसा ही भक्तिभाव का भी है । उनके पास महल मे नोकर-चाकर की कोई कमी नही है । परंतु हमारे ऊपर प्रेमभाव ऐसा है की चावल का दाना दाना अपने हांथो से ही बनायी है, हमारे सत्संगी स्त्री-पुरुष ऐसा भाव रखते है कि उसकी तो जो प्रशंसा भी की जाय वह कम होगी ! " "यह धन्य ही तब तक काम की नही थी लेकिन उसका छिलका नीकल गया तो वह चावल बन गया उसी तरह हम भी स्वरछ हो गऐ । दिये जाये तो माल काम आता है । स्वच्छ होने पर ही वह चावल कहलाया । और बाई भक्ति से, छिला और उसे शुद्ध किया तो उसका सत्य कायम रह गया । उसी तरह सभी स्वच्छ रहेगे तो लोग अपना विश्वास करेगे । सत्संग दिव्य लगेगा । भगवान प्रशन्न रहेगे ।"

कैसी अदभुत पद्धति थी उपदेश देने की । थोडा -थोडा उपदेश भी अंतरमे समा जाए ऐसे सरल अभ्यास करने पर महाराज की मनोहर मूर्ति याद आ जाए ऐसा उनका स्वस्य ।

समग्र सभा आज कुशळकुवरबाई के दिये हुए स्वच्छ चावल की सुगंध से आनंदित हो उठी । उस सुगंध मे महाराज का उपदेश सोने मे सुगंध की तरह से समा गया ।

स्वामिनारायण नाम मणि है ।

- हर्षाबहन रजनीभाई गोवालिया.
(बापुनगर)

भगवानकी कथा है सत्राजित तपस्या करके सूर्यनारायण को प्रशन्न किया । तब स्यमंत्रक मणि सूर्यनारायण ने सत्राजित को दिया । उस स्यमत्रक मणि का कितना प्रभाव ? वह मणि जिसके पास हो वहां कभी अकाल नही पडेगा । रोगव्याधि नही होगी । वह मणि जहां हो वहा काले सर्प आदि आ नही शकते । वह स्वंमत्रक मणि जहां हो वहां मायावी शकित का प्रवेश नही होता । वह मणि रोज ६०मन सोना देती है ।

भगवान का नामभी मणि है । स्वामिनारायण का जप करे तो खराब विचार नही आएगे । इस मणि को सदैव पास रखा जाएतो अमर बन सकते है । जन्म-मरण का रोग मिट जाएगा । यह मणि जहां हो वहां से अंधकार स्मी अज्ञान अदृशय हो जायेगा । यह मणि जहां हो वहा से दुष्ट माया शक्ति काम क्रोध लोभ आदिक अधर्म का स्पर्श भी नही होता । मणि प्रभाव क्या है कि यह समझना चाहिये । पहली बात तो यह है कि परमात्मा से बात करनेकी शर्त वृति स्मी लाइन बिगडी हुई, नही होनी चाहिये । लाइन क्लीयर होनी चाहिये । वृति स्मी लाईन प्रभुमे ही निरंतर प्रवृत होनी चाहिए । तभी लाईन क्लीयर होगी । और अगर लाईन क्लीयर होगी तो आप टेलिफोन से बात कर शकते है । युगान्डा या केनेडा या अमेरिका हो या ओस्ट्रेलिया हो जहां फोन से बातचीत करने के लिये लाईन क्लीयर होनी चाहिये ।

किसीने बात की है । हां द्रोपदी ने केशव से जलदी से मेरी मदद के लिये पधार कर मेरी लाज बचाइए । प्रभु आए और ९९९साडी के चीर प्रदान फिर क्याकि लाईन क्लीयर थी ।

दादाखाचर ने प्रभु वियोग मे प्रभु को पुकारा तो उनकी आवाज सुनकर फूलो का हार पहनाकर कहां "दादा मैं कही नही गया था आपके साथ ही हूँ । आप चिंता मत किजिये ।" संत सखुबाई को कमरे मे बंद किया था । लाईन क्लीयर थी तो वृति द्वारा भगवान आवाज सुनकर तुरंत दौड आए । सखु ! चिंता मत कर मै आ गया हूँ तूं यात्रा करने जा मै तेरे घर काम करुंगा । इस प्रकार अनेक कार्य भक्तो का भगवानने किया है । केवल अपना मन पवित्र होना चाहिए । राग, द्वेष, ईर्ष्या, कपट का त्याग करना चाहिये । स्वामिनारायण मंत्र का निरंतर जप करते रहना चाहिये । अपने कितने संत भगवान के साथ बात करते है । स्वामिनारायण मंत्र का नाम लेते ही यमदूत भाग जाते है।

स्वामिनारायण आज प्रगट महामंत्र है
श्रवणे सुमता कंप्ये दिनकर दुतजो ।
जीवन बंधन कापी सदा सुखिया
करे ॥

स्वामिनारायण महामंत्रकी अति महिमा है । यदि कोई मरणासन्न हो उसके चारो तरफ बैठकर महांमत्र का जाप करे तो चाहे कितना ही पापी क्योन हो उसके पास यमदूत नही आएगे ।

प्रभुके नाम का जाप करने से भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षश, इत्यादि उपद्रव नही करते है । यही नाम का

प्रताप है । यह नाम गंगाजल की तरह पवित्र है । ईस नाम के स्मरण से धन, यश, की प्राप्ति होती है । अन्तमे उतम गति मिलती है । इतना आशीर्वाद स्वामिनारायण मंत्र मे शतानंद स्वामी को दिया ।

•

भुज के लाधीबा

कंचनबहन बाबूभाई पटेल (रतनपर मुलीदेश)

कच्छ-भुजकी कापराश ज्ञाती की बांधीबाई नामक एक महिला थी । वे छोटी उम्रमे ही विधवा हो गई थी । परिणाम स्वस्म भगवान की भक्ता होगई थी । श्री हरि जहां भी होते वे जो भी लीला करते उसे वे अपनी दिव्य दृष्टी से देखती और दूसरे को सुनाती थी ।

इसप्रकार की एश्वर्य वाली होने पर भी महाराज के बचन मे पूर्ण श्रद्धा थी । एक बार श्री हरि भुज मे गंगारामभाई के घर विराजमान थे । साथ मे लाधी इत्यादि महिलाये भी बैठी थी । वहां एकाएक महाराज ने कहां लाधी बा शरीर के आभूषण पहनकर गांव मे से पानी भरकर ले आओ ।

श्री हरिकी आज्ञा हुई की लाधी बा सुन्दर साडी एवं अलंकार धारण करके पानी भरने गयी, सारे गाव के लोग इस तरह देखकर नाना प्रकार की बाते करने लगे । फिरभी उन्हे कोई असर नही हुई और प्रभु की आज्ञा को शिरोधार्य किया । इसीलीये तो महाराज लोया के वचनामृत मे लाधीबा की प्रशंसा किये है ।

आजीविका के लिये लाधीबा का भाई थोडा खेत दिया था जिससे उनका भरणपोषण हो जाता था । एक बार महाराजने माताजी को भुज भैजा और कहां कि लाधी बा इन्हे आप अपने साथ रखकर निर्वाह की चिन्ता मत करना आपके खेत मे द्विगुणित अन्न पैदा होगा । इस प्रकार दोनो वर्षो तक साथ रहकर प्रभु का भजन करती रही ।

एकबार लाधी बा ने कहां कि माताजी अब मै धाममें जाउगी, मेरे शरीर की आयुष्य पूर्ण हो गयी है । माताजी ने कहां महाराज ने आपके आश्रय मे मुझे रखा है, आप छोडकर चली जायेगी । बाद मे तो दोनो स्वंय गोबर लीपकर ध्यान मुद्रा मे बैठ गयी और एक साथ ही भगवान के धाम मे गई । दोनो का एक साथ ही अग्नि संस्कार किया गया ।

यह ऐश्वर्य की बात संपूर्ण कच्छमे फैल गई । स्वामिनारायण प्रत्यक्ष भगवान है । इनके जो भक्त है वे भी इनके जैसे समर्थ एवं स्वतंत्र है ।

पृष्ठ ११ से आगे

गुरु पूर्णिमां

प्रथम भगवान ये संत है की नही ? इनको मुह से तो आपने मिठा, चीकना नही खानेको कहां है । तो बोलो हमारे गले से गत्रे का मीठा रस आपकी प्रसादी का हो फिरभी हमारे सदगुरु के सूखते गले के समान हमसे गले के नीचे केसे उतरेगां ???'' और सैद्धांतिक जवाब सुनकर महाराज खुश हुए ।

बाह भकतराज ! वाह सदगुरु संतो के साथ मे आपकी ऐसी बुद्धि आपको निर्विकल्प समाधि के सुखसे युक्त कर देगी । हमभी आज आप जैसे भक्तके विचार के अनुसार पूर्णाहुति का आदेश देते है । यह पृथ्वी धन्य हो गई जहां पर ऐसे भक्तका समागम हुआ जिसमें अपरिमित प्रभु भक्ति है । इसीलिये तो गुणातीतानंद स्वामी कहते है कि जिसे भगवान मिले उसका एक पग अक्षरधाममे तथा जिसे ऐसे साधु मिले उनके दोनो पग अक्षरधाममे ।

गुरु भगवान का घर है । संत भगवान का चैतन्य मंदिर है । सदगुरु निर्मल पवित्रता कि मूर्ति है । संत नित्यानंद आनंद के स्वस्म है । सदगुरु सभी गुणो कि निधी है । सदगुरु संत कल्याणका आश्रय स्थान है । एसे सदगुरु संत जहां बिचरण करते हे वहां मंगलमय संदेस देते है । मुकतानंद स्वामीने गाया है कि एसे गुस्तो ''हरिसम सब दुख हरि'' तथा ''ऐसे संत द्वारा मिलते है प्रगट मुरारी''

श्रीजी महाराजने धर्मकुलमे गुस्मद की गादी स्थापित करके सदा के लिये पूजनीय परंपरा का प्रर्वतन किया है । आचार्यपद के गौरवको बढाया है । प्रातः स्मरणिय प. पू. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने अपने अनुगामी कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज को बनाकर सभीका बडा उपकार किया है । तो एसे गुरु पूर्णिमां के पवित्र अवसर पर महाराजश्री का केवल गंध अक्षत पुष्पो से मात्र पूजन न करके वल्कि उनके प्रति निष्पक्ष निर्दोष तथा दिव्य भावना रखकर गुरु पूजन के निमित उनकी प्रशंसा की जाय ऐसी सभी से अपेक्षा ।

सत्संग समाचार

सर्वोपरि भरतखंड के अधिष्ठाता श्री नरनारायणधेव के केसर स्नान के दर्शन

श्रीनगर अहमदाबाद के विराजमान सर्वोपरिइष्टदेव श्री नरनारायणदेव आदि देवो के ज्येष्ठ शुक्ल-१५ के दिन श्रीहरि के अपर स्वरूप प.पू. बडे महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों से ७-०० बजे धूमधाम से संपन्न हुआ। इस प्रसंग पर दर्शन का लाभ लेने के लिए अहमदाबाद शहर और गाँव गाँव से हजारो की संख्या में हरिभक्तगण पधारे थे। ऐसे मंगलकारी दिव्य दर्शन जिसका प्राप्त उसको भाग्य का अति सुख प्राप्त हुआ। ठाकुरजी के पुजारी ब्र. स्वामी राजेश्वरानन्द आदि पुजारी संतोने ठाकुरजी की उत्तम सेवा की। इस प्रसंग पर यजमान प.भ. नवीनचंद मगनलाल चौकसी और प.ब. जितेन्द्रकुमार मगनलाल चौकसी के परिवार ने अलभ्य आनन्द प्राप्त किया। पू. महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी के मार्गदर्शन के कारण आयोजन बड़ी कुशलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

- कोठारी स्वामी धर्मप्रकाशदास

प्रांतीज मंदिर में श्री घनश्याम महाराज का शताब्दी महोत्सव मनाया गया

साबरकांठा के प्रांतीज श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज का शताब्दी महोत्सव श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से तथा अ.नी. गवैया स्वामी केशवजीवनदासजी की दिव्य प्रेरणा से और प्रांतीज के समस्त हरि भक्तों और ट्रस्टी मण्डल के सम्पूर्ण सहयोग से दिनांक २३-५-०६ से ३०-५-०६ तक शताब्दी महोत्सव धूम-धाम से मनाया गया।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगीभूषण पारायन, १०१ कुण्डी महाविष्णुयाग और सात दिन श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखण्ड धुनि महाअभिषेक, ५६ भोग अन्नकूट तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की भव्य शोभायात्रा आदि कार्यक्रम का सुन्दर आयोजन किया है।

श्रीमद् सत्संगीभूषण के वक्ता पद पर सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार पूज्य शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) ने संगीत की सुमधुरशैली में कथा अमृतपान कराया। समग्र उत्सव के यजमान प.भ. बाबुलाल मणिलाल शाह के परिवार ने दिव्य लाभ प्राप्त किया। पारायण के मुख्य यजमान प.भ. हसमुखलाल कचरालाल भावसार का परिवार, विष्णुयाग के मुख्य यजमान पद का लाभ प.भ. कनुभाई दामोदरदास पंड्या के परिवार ने प्राप्त किया। इस अवसर के दरम्यान प.पू. बड़े महाराजश्री तथा श्रीनरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. बडी गादीवाला श्री एवं प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा पू. श्रीराजा इस प्रकार समस्त धर्मवंशी परिवार पधारकर दर्शन आशीर्वाद का सभी को दिव्य लाभ दिया। ता. २८-५-०६ के प.पू.ध.धु. आचार्य महारजश्री की शोभायात्रा निकाली गयी थी। ता. २७-५-०६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का महाभिषेक, अखंड धुनि, पूर्णाहुति का कार्यक्रम तथा विष्णुयाग की पूर्णाहुति एवं पारायण की पूर्णाहुति की गयी थी। उपरोक्त सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने समस्त सभाजन को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। पूर्णाहुति के दिन प्रांतिज गाँव के हरिभक्तो को भोजन का महाप्रसाद दिया गया था।

- महंत साधु माधवप्रसाददास, प्रांतीज

एप्रोच (बापूनगर) मंदिरमें ११ घन्टे की अखंड धूनि

प.पू.ध.धु. आचार्य तथा धर्मकुल परिवार के आशीर्वादात्मक आज्ञा से तथा यहाँके महंत स्वामी की प्रेरणा से ज्येष्ठ शुक्ल १० के दिन श्रीहरि के अन्तर्ध्यान के निमित्त प्रातः ८ बजे से सांयकाल ७ बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुनि की गयी थई। जिसके यजमान श्री हरजीभाई वालजीभाई माणीया थे। स्त्री-पुरुष सभी बडी संख्या में उपस्थित होकर लाभ लिये थे। मंदिर में ही प्रसाद की व्यवस्था की गयी थी।

- गोरधनभाई वी. सीतापरा

नारायणपुरा (ता. कडी)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा हिम्मतनगर मंदिर के महंत शा. आनन्दजीवनदासकी प्रेरणा से तथा गाँव के समस्त हरिभक्तों के सहयोग से इस गाँव के १०० वर्ष पूर्व होते ही "ग्राम स्थापना शताब्दी पर्व महोत्सव" का धार्मिक कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग पर श्रीमद् सत्संगि भूषण पारायण शा.स्वा. नारायण वल्लभदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ तथा तीन दिन का विष्णुयाग तथा श्री विघ्नविनायकदेव की प्राण प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से वेद विधि से सम्पन्न हुई। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब गाँव में पधारे उस समय संत-हरिभक्तो ने धूमधाम से साथ स्वागत किया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री यज्ञ की पूर्णाहुति एवं मंदिर में आरती करके सभा में पधारे थे। उपरोक्त सभा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। आशीर्वाद में बताया कि इसी प्रकार मंगलप्रसंग यहाँ के सत्संगी करते रहें, सभी को भगवान सुखी बनावें। सेवा भावी यजमानों को शाल ओढाकर सम्मानित किये थे। इस प्रसंग पर स.गु. शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी आदि संत पधारेहुए थे। सभा संचालन स्वामी छपैयाप्रसाददासजीने किया था। आनदं स्वामी का मंडल-पूजारी स्वामी धर्मकिशोरदास, स्वा. हरिप्रकाश, जसु भगत तथा घनश्याम भगतने उत्तम सेवा कार्य किया।

- कोठारी, नारायणपुरा

श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर में उत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा ईडर के महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री गोपीनाथजी, हरिकृष्ण महाराज का १६० वाँ प्रतिष्ठा उत्सव ता. ९-६-०६ के दिन धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग पर प.प.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ता. ८-६-०६ की रात्रि में यहाँ पधारे थे। प्रातः श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज तथा सूर्यनारायण देव का षोडशोपचार वैदिक मंत्रो से महाभिषेक किया गया था। इसकेबाद प.पू. आचार्य महाराजश्री अन्नकूट की आरती उतारकर सभा में पधारे थे। उपरोक्त सभा में ईडर के महंत स्वामी एवं टोरड़ा के महंत स्वामी पूज्य महाराजश्री का पुष्पहार से स्वागत किये थे। पाटोत्सव के यजमान प.भ. गांडाभाई कालीदासभाई (गुलाब पुरावाले) प.भ. सोमाभाई नरसीभाई पटेल परिवार ने प.पू. आचार्य महाराजश्री की पूजा विधि करके आरती की थी। विद्वान संत प्रासंगिक प्रवचन किये

थे । अंत में समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । अंत में महंत स्वामी ने प.पू. बडे महाराजश्री का संकल्प म्युझियम में सेवा करने का आग्रह किया था । सभा संचालन महंत आनन्द स्वामीने किया था । (हिंमतनगर महंत) कोठारी स्वामी सत्यसंकल्पदासजीने उत्तम सेवा किये थे ।

- शा.स्वा. आनन्दजीवनदासजी, हिंमतनगर

काशीन्द्रा में महिलाओं के मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा

काशीन्द्रा गाँव में महिलाओं के नूतन मंदिर के पूरम होते ही मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया था । इस प्रसंग के उपलक्ष्य में ता. १४-६-०६ से १६-६-०६ तक त्रिदिनात्मक श्रीमद् भागवत पारायण, विष्णुयाग आदि कार्यक्रम को धूम धाम से मनाया गया । कथा शा.स्वा. हरिओमप्रकाशदासजी (जेतलपुर अक्षर महोलवाडी संचालक) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । गाँव में मूर्तियों की भव्य यात्रा निकाली गयी थी । जिसका दिव्य दर्शन करके हरि भक्तों धन्यता का अनुभव किया । महिलाओं को दर्शन का दिव्य लाभ देने हेतु गादीवालाश्री ता. १६-६-०६ के दिन पधारी थी । ता. १६-६-०६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे । उन्हीं के हाथों से ठाकुरजी की प्रतिष्ठा विधि वेद मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न हुई । प्रासंगिक सभा में पू.पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) महंत स्वामी जेतलपुर, कांकरिया, धोलका, छपैया के पूर्व महंत स्वामी आदि संत प्रसंगानुस्म प्रवचन किये । समस्त सभा को महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया । समग्र आयोजन पू.पी.पी. स्वामी तथा जेतलपुरके महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजीने किया था ।

- शा. भक्तिनन्दनदास, जेतलपुर

कालियाणा (ता. विरमगाँव)

कालियाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से ज्येष्ठ शुक्ल-१० को सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के अन्तर्ध्यान की तिथि के निमित १२ घंटे की स्वामिनारायण धुनि का आयोजन किया गया था । जिसमें गाँव के समस्त हरिभक्त भाग लिये थे । श्री डाह्याभाई, श्री भीखुभाई, श्री रामाभाई, हरिभाई, रामाभाई, जेठुभाई आदि छोटे-बड़े हरिभक्त प्रसंग में सेवा कार्य किया । *- जनकभाई*

धरियावद (राजस्थान) मंदिर में पंच कुंडी मारुति यज्ञ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से धरियावद श्री स्वामिनारायण मंदिर में त्रिदिनात्मक श्रीमद् भागवत कथा पंच कुडी मारुति यज्ञ का आयोजन किया गया था । कथा के वक्ता पू. पी.पी. स्वामी ने अपनी अमृतवाणी का सभी को रसपान करवाया । इस प्रसंग पर धरियावद नगरमें शोभायात्रा, पोथीयात्रा धूम धाम के साथ निकाली गयी थई । कथा का लाभ हजारों हरिभक्तोंने लिया । *- साधु भक्तिनंदनदास*

दोलाराणा वासणा श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदरि में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ज्येष्ठशुक्ल-३ के दिन श्री घनश्याम महाराज का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया । प्रातः ७ बजे ठाकुरजी का अभिषेक, समूह महापूजाविधि शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी तथा छपैयाप्रसाददासजीने करवायी । श्री मूलजीभाई केशाभाई चौधरी की तरफ से प्रसाद का वितरण किया गया था । *- हार्दिक भगत*

सिद्धपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में १४१ वाँ वार्षिक पाटोत्सव संपन्न

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री धर्मभक्ति, हरिकृष्ण महाराज तथा श्री राधाकृष्ण देव के पाटोत्सव ज्येष्ठ शुक्ल-११ के दिन धूमधाम से सम्पन्न हुआ ।

यहाँ के महंत स्वामी भक्तिप्रियदासजी तथा महंत स्वामी श्रीरंगदासजी की प्रेरणा से गवाडा के प.भ. पटेल सोमाभाई वालजीभाई का परिवार यजमान पद का लाभ लिया था । प्रातः ७-०० बजे ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक तथा महापूजा विधि विद्वान पंडितो द्वारा सम्पन्न हुई ।

प्रासंगिक सभा में महंत स्वामीने यजमान का फूलहार से सम्मान किया था । सभा का संचालन शा. छपैयाप्रसादासजीने किया था । इस प्रसंग पर श्रीरंग स्वामी, पूजारी स्वा. चंन्द्रप्रकाशदास तथा बालू स्वामीने उत्तम सेवा की थी । *- हार्दिक भगत*

अपनी शैक्षणिक संस्था का समाचार

श्री स्वामिनारायण सं.म.वि. जेतलपुर

आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा संस्थापित तथा परमपूज्य बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की कृपा दृष्टि तथा वर्तमान आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से जेतलपुर धाम में चल रही संस्कृत पाठशाला में चालू वर्ष का १००% प्रतिशत परिणाम था । पूज्य महाराजश्री संस्था के संचालक तथा कर्मचारी गण तथा उत्तमगुण प्राप्त करके उत्तीर्ण हुए सभी विद्यार्थीयों को हार्दिक आशीर्वाद देते हैं ।

प्रत्येक कक्षा में प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थीयों की नामावली

प्रथमा-१ (कक्षा-८)

१. चौबीसा श्री सुशान्त भेस्लाल ८०.७१%
२. पटेल दक्षेशकुमारहसमुखलाल ७८.१४%
३. आनन्दस्वस्मदास स्वा. हरिवल्लभदासजी ७४.२९%

प्रथमा-२ (कक्षा-९)

१. स्वा. गोपालचरणदास ७२.७१%
२. स्वा. भक्तिकिशोरदास ८४.२७%
३. पटेल नीरवकुमार रसिकलाल ७९.२७%

प्रथमा-३ (कक्षा १०)

१. मेहता जनक धीरूभाई ७२.७१%
२. साधु जयस्वस्मदास ६८.१४%
३. साधु सत्संग सागरदास ६७.४३%

पूर्वमध्यमा (कक्षा ११)

१. साधु चैतन्यस्वस्दास ८७.७१%
२. पाटीदार श्याम ७६.८६%
३. साधु विवेकसागरदास ७३.००%

मध्यमा-२ (कक्षा १२)

१. कापडिया चिंतन रमेशभाई ७६.४३%
२. रावल जिगर किरीटभाई ७१.२७%
३. साधुनारायण स्वस्मदास ६७.७१%

शास्त्री-१

१. साधु कुंजविहारीदास ६६.००%
२. काजी सुमन्तकुमार कुलमानी ६२.३७%
३. घीमिरे खेमराज गोकर्णीप्रसाद ६१.७१%

शास्त्री-२

१. त्रिपाठी विन्धियाचल ६८.२७%
२. लहेरुतुषार ६६.७१%
३. साधु जयेन्द्रप्रकाशदास ६६.१४%

शास्त्री-३

१. साधु हरिकृष्णदास ७६.४३%
२. दवे विपुलकुमार चिमनलाल ६४.१४%
३. जोषी योगेशकुमार ६०.००%

आचार्य-१

१. साधुकृष्णप्रकाशदास ७२.२५%
२. साधु भक्तिकिशोरदास ६३.००%
३. चौबीसा गणेशलाल ६१.२५%

आचार्य-२

१. साधु विवेकसागरदास ८४.२५%.
२. दवे धर्मेन्द्रकुमार चिमनलाल ६५.००%
३. त्रिवेदी हितेशकुमारगणेशलाल५२.२५%

सर्वोपरि छपैयाधाम में उत्सवों का त्रिवेणी संगम

संप्रदाय के सर्वोपरितीर्थक्षेत्र छपैयाधाम में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा ब्र.स्वा. रामकृष्णदासजी की प्रेरणा से तीन उत्सव मनाये गये।

१-६-०६ से ७-६-०६ तक श्रीमद् सत्संगीजीवन पारायण शास्त्री स्वामी विष्णुप्रसाददासजी (पूर्व कोठारी बोटाद) की प्रेरणा से बोटाद की अ.नि. सांख्ययोगी लक्ष्मीबा के स्मरणार्थ अनेक शिष्यों की तरफ से शा.स्वा. हरिप्रसाददासजी (गढपुर) के वक्तापद तथा संहितापाठके वक्तापद पर ब्र. पवित्रानंदजी विराजमान थे। संगीतमय शैली में कथा हुई थी। जिसका लाभ देश-विदेश के हजारों हरिभक्तों ने लिया। इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री प.पू. अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवाला तथा पूज्य श्रीराजा इस प्रसंग पर पधारकर यजमान परिवार को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। ज्येष्ठशुक्ल ११ के दिन ठाकुरजी का १५६ वाँ वार्षिकोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाकी आज्ञा से सांख्ययोगी गीता बा (विरमगाँववाली) तथा उनकी की शिष्यांये एवं भुज की सांख्ययोगी बहनो की तरफ से धूमधाम से मनाया गया। इस उत्सव के अवसर पर वचनामृत पारायण की कथा सां. कोकीलाबा, सां.उषाबा तथा आरती बा ने किया।

प्रातः ६-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की वरद हाथों से ठाकुरजी का महाभिषेक वेद विधि से सम्पन्न किया गया था।

शिलान्यास विधि

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा पूज्य पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) के मार्गदर्शन से सर्वोपरिसर्वावतारी स्वामिनारायण भगवान के जन्म स्थान मंदिर की शिलान्यास विधि सांख्ययोगी रविकान्ताबा (लोजपुर) उनकी शिष्या चंपाबा, भानुबहन तथा प.भ. गोविन्दभाई ठक्कर (तारापुर) डॉ. श्रीमाळी परिवार (मुंबई) आदि सभी भक्तों के सहयोग से तथा शिल्प शास्त्रज्ञ सोमपुरा तथा मंदिर निर्माण के अनुभवी इंजिनियर के मार्गदर्शन से प.भ. अनंतभाई नारायणबाई शाह, अ.सौ. रमाबहन शाह तथा चि. कमलेशभाई, केतनभाई, विपुलभाई, पिनाकिनभाई का परिवार जिसके यजमान पद पर तथा श्रीहरि के अपरस्वरुप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से शास्त्रोक्त विधि से संपन्न हुआ। जिसकी विधि उमरेठ वाले राजुभाई शुक्लने करवाई थी। सर्वोपरि इष्टदेव श्री घनश्याम महाराज के जन्म स्थान के शिलान्यास विधि में प.पू.ध.धु. आचार्य महाजश्री ने स्वयं धारण की हुई कीमती सुवर्ण की अंगुठी को उसमें प्रतिष्ठित कर दिया। यह देखकर उपस्थित हरिभक्तों ने अपने आभूषणों को उतारकर खात में डालने लगे।

इस सभा में पू. महंत स्वामी निर्गुणदासजी पूज्य पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) लोजपुर के पूज्य चैतन्य स्वामी, बोटाद के शा.स्वा. विष्णुप्रसाददासजी, आदि संत बडी संख्या में उपस्थित होकर इस महानकार्य में साथ सहकार देकर प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञानुसार सम्पूर्ण काम त्वरित पूर्ण हो इसलिए सभी ने श्री घनश्याम महाराज के समक्ष प्रार्थना की थी।

इस प्रसंग पर ब्लड प्रेसर निदान कैम्प में डॉ. नवनीत वडगासा ने अनेक संत हरिभक्तों का चेक अप किया था। सेवाकरके महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त किये।

अंत में ब्र. वासुदेवानंदजीने छपैया धाममें बडे महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री, लालजी महाराजश्री, बडी गादीवालाश्री, प.पू. छोटी गादीवालाश्री की उपस्थिति में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की अध्यक्षता में श्री स्वामिनारायण द्विशताब्दी रजत जयंती महोत्सव ता. २५-१०-०६ से २७-१०-०६ तक बडे धूमधाम से सम्पन्न किया गया। जिस में सभी भक्तों से तन, मन धन से सेवाकरने का अनुरोध किया गया था।

इस प्रसंग पर उपस्थित संत हरिक्त तथा सांख्ययोगी बहनों का आभार व्यक्त किया गया था।

अंत में यजमान परिवार एवं समस्त सभाएवं वयोवृद्ध संत रामकृष्णानंदजी को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया।

सुवर्ण सिंहासन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा उन्ही की प्रेरणा से मंदिर में सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज के मध्यसिंहासन तथा उन्हीं के द्वार को सुवर्ण के पतरों से मंडित करने के करीब तीन लाख की सेवा विरमगाँव के निवासी सेवानुरागी श्री पुरुषोत्तमभाई धारशीभाई ठक्कर के परिवार की तरफ से की गयी थी। जिसके ऊपर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री खूब प्रसन्न होकर हार्दिक आशीर्वाद दिये हैं। *- कनुभाई दवे*

डिंडोल मंदिर में पाटोत्सव सम्पन्न

यहाँ के प्रसादी के श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ८-५-०६ से १०-५-०६ तक शा.स्वा. प्रेमस्वरूपदासजी (नारायणपुरा महंत) के वक्तापदपर श्री मद् भागवत, रामायण तथा श्रीमद् सत्संगीभूषण की कथा सम्पन्न हुई थी।

ता. १०-५-०६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का पाटोत्सव एवं कथा की पूर्णाहुति बडे धूमधाम से की गयी थी। इस प्रसंग पर बहनों को दर्शन देने के लिए प.पूज्या गादीवाला पधारी थी। पाटोत्सव के यजमान अ.नि. पटेल चंचलबहन अंबालाल परिवार के रणछोडभाई अंबालाल तथा पौत्र महेशभाई, परेशभाई, अमीतभाई ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। *- कनुभाई पटेल*

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

जीवापर (हालार)

यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा ता. २१-५-०६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम के साथ सम्पन्न हुई। इस प्रसंग पर श्रीमद् सत्संगीजीवन शास्त्र का पारायण स्वामी घनश्याम प्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री)ने अपनी सुमधुर शैलीमें किया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब यहाँ पदार्पण किये उस समय शोभायात्रा निकाली

गयी थी । सभी को महाराजश्री में श्रीजी महाराज का दिव्य दर्शन हुआ । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से प्रतिष्ठित मूर्ति के दर्शन करके भक्तजन भावविभोर हो गये । मूली देश के संत महंत तथा अहमदाबाद, धोलका, आदि धामों से संत पधारकर दिव्य लाभ दिये थे । जीवपर के हरिभक्त उत्तम सेवा किये थे । यमजान परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । बहनो को दर्शन आशीर्वाद का सुख देने के लिये प.पूज्या गादीवालाजी भी पधारी थी । कथा की पूर्णाहुति प.पू. लालजी महाराज के हाथों से की गयी थी । यहाँ के निवासी इस कार्य से धन्यता का अनुभव कर रहे थे ।

- शा. भक्तिकेशवदास

रामगढ (धांगधा)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से धांगधा के श्री स्वामिनारायण मंदिर से संत मंडल रामगढ गाँव में पधारकर हरिभक्तों को कथा वार्ता का लाभ दिये थे ।

अंकेवालिया (धांगधा)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से धांगधा नरशीपरा मंदिर के संतोने ता. २४-६-०६ के दिन कथा वार्ता करके सुन्दर लाभ दिया था । *- अनिल बी. दूधरेजिया*

सुरेन्द्रनगर मंदिर में देवों का चंदन चर्चित दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से तथा गाँव के भक्तों के सहयोग से सुरेन्द्रनगर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव, श्रीहरिकृष्ण महाराज तथा बाल स्वरूप घनश्याम महाराज तथा श्री नरनारायणदेव को अद्भुत चंदन से चर्चित करके पुजारी संत विश्वस्वरूपदासजी तथा शांतिप्रकाशदासजी तथा शा. प्रेमवल्लभदासजीने अलौकिक दर्शन का लाभ दिया था । ज्येष्ठ शुक्ल १५ (पूनम) के दिन प्रातः केसर स्नान, महापूजा का भी आयोजन किया गया था ।

- शैलेन्द्रसिंह झाला

विदेश सत्संग वृत्तान्त

वोशिंग्टन (डी.सी. I.S.S.O. चेप्टर)

यहाँ की सत्संग सभा नियमित रूप से होती है । २० मई के दिन शनिवार की साम को २॥ बजे श्री स्वामिनारायण भगवान की लीला कथा, धुनि, भजन, कीर्तन, नित्य नियम का कार्यक्रम समूहमें किया गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग सुन्दर चल रहा है । *- कनुभाई पटेल*

नडोला (झांबिया आफ्रिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के हरिभक्त श्री प्रफुल्लभाई तथा उनका परिवार - श्री लालुभाई, श्री रमणभाई, श्री कीरीटभाई इत्यादि ने सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रागट्य के दिन तीन घंटे तक कथावार्ता धुनि-भजन-कीर्तन का कार्यक्रम किया गया था । सत्संगियो के सिवाय भी अन्य लोगो ने दर्शन का लाभ लिया थआ । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग की प्रवृत्ति सुन्दर चल रही है । *- जयेश*

कोलोनिया (I.S.S.O. अमेरिका)

यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत स्वामी देवप्रसाददासजी की प्रेरणा से ज्येष्ठ शुक्ल १५ के दिन ठाकुरजी को केसर स्नान वेद विधि से कराया गया था । प्रासंगिक सभा में देव स्वामी ने प्रेमानंद स्वामी के कीर्तन से सम्बन्धित कथावार्ता का लाभ दिया था । शा.स्वा. ईश्वरचरणदासजीने मूर्ति को अपने हृदय में उतारने की प्रक्रिया समझायी थी । हरिभक्तों ने बडी संख्या में उपस्थित होकर विशेष लाभ लिया था । *- प्रविणभाई शाह*

विहोकन न्यूजर्सी (I.S.S.O. अमेरिका)

यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से १९वां पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर महंत शा.स्वा. हरिप्रकाशदास (बोस्टन), स.गु. महंत स्वामी देवप्रसाददासजी (कोलोनिया) स्वामी विश्वप्रकाशदासजी, शा. ईश्वरचरणदासजी तथा महंत स्वामी माधवप्रसादासजी की उपस्थिति में हजारों हरिभक्त दर्शन करके धन्यता का अनुभव किये थे । इस प्रसंग पर अनपी "सेवा" संस्था द्वारा फ्री मेडिकल केम्प में अनेकलोगोंने डॉकटरो के निदान का लाभ लिया था । सेवा की प्रवृत्ति खूब सराहनीय है । इस प्रसंग पर प.पूज्या अ.सौ. बिन्दुराजा भी सभी को दर्शन का लाभ देने हेतु पधारी थी । महिलाओं द्वारा उनका स्वागत किया गया था । प.भ. प्रहलादभाई, प.भ. भक्तिभाई पटेल आदि हरिभक्त सेवा में लगे थे ।

- प्रविणभाई शाह

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

चितरवाड़ा (ता. तारापुर) : श्री शैलेषकुमार दिलीपभाई पटेल (उम्र वर्ष १८)

वारणा (ता. धोलका) : श्री जयेन्द्रसिंह बहादुरसिंह गोहेल (उम्र वर्ष १८)

उपरोक्त दोनो विद्यार्थी जेतलपुर श्री स्वामिनारायण मंदिरमें रहकर अभ्यास करते थे । ता. ७-६-०६ के दिन दोनो युवा विद्यार्थी अकस्मात में अक्षरनिवासी हुए है । श्रीहरि उन की आत्मा को शांति प्रदान करे, ऐसी प्रार्थना ।

राजकोट : (मूल धरमपुर खाखरिया) : श्री जयंतीभाई मोहनलाल सोनी ता. १८-५-०६ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अहमदाबाद : श्री रमेशभाई (दोरणावाला) के पिताजी शांतिलाल दामोदरदास ठक्कर १०२ वर्ष की उम्र में श्रीजी का स्मरण करते हुए ता. २-६-०६ के दिन प्रातः ३-०० बडे अक्षरनिवासी हुए हैं । जो श्री नरनारायणदेव तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री के प्रति निष्ठावाले थे । उनके अक्षरनिवासी होने से सत्संग में बडी कमी हुई है ।

मेघाणीनगर : श्री नागजीभाई जीणाभाई पटेल ता. २३-६-०६ के दिन श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

अंकेवालीया (धांगधा) : श्री पारेजिया रेवाभाई सेंधाभाई (उ. ७० वर्ष) श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए ता. १४-६-०६ के दिन अक्षरनिवासी हुए है ।

मोखासण : श्री हीराभाई जोईताराम पटेल ता. २८-६-०६ के दिन आषाढ शुक्ल ३ के दिन श्रीहरि का अखंडस्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।



छपैयाधाममें बाल स्वरूप घनश्याम महाराज के पाटोत्सव के प्रसंग पर दिव्य अन्नकूट दर्शन ।



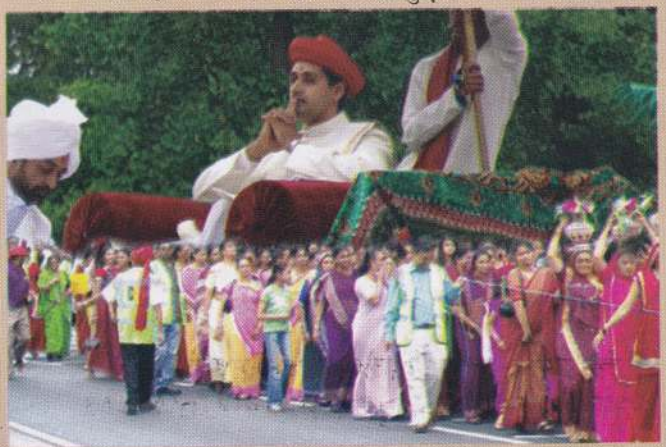
लंडन विल्सडनलेन में अपने मंदिर में श्री घनश्याम महाराजश्री की आरती उतारते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



लंडन विल्सडनलेन में अपने मंदिर में सुखपर (कच्छ) के हरिभक्तों द्वारा आयोजित पारायण प्रसंग पर सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री का दर्शन करते हुए हरिभक्त गण ।



सर्वोपरि छपैया धाम में 'जन्मस्थान' मंदिर में शिलारोपण विधि प.पू. महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद हाथों से सम्पन्न हुई ।



लंडन विल्सडनलेन मंदिर के पारायण प्रसंग पर आयोजित भव्य शोभायात्रा में दर्शन देने हेतु प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।

SHREE SWAMINARAYAN REG. NO. GUJ.581 REG. NO. G.A.M.C. 003 Valid up to December 2008
permitted to Post AHME.P.S.O. On 11th of Every Month



ज्येष्ठ सुद-१५ को सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का केसर स्नान के बाद श्रीहरि के अपर स्वरूप प.पू. बडे आचार्य महाराजश्री और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अद्‌भुत अलौकिक दिव्य भाव से दर्शन करते हुए । धर्मवंशी आचार्यश्री की दर्शन करने की इस महान अद्‌भुत परंपरा की रीति जगत में दूसरे किसी भी स्थान पर देखने को नही मिलेगी !



ईडर मंदिर में श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



ईडर मंदिर में सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।

Praful Kharsani